CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/S/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
उठी ऐसी घटा नभ में
छिपे सब चाँद और तारे,
उठा तूफान वह नभ में
गए बुझ दीप भी सारे,
मगर इस रात में भी लौ लगाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
गगन में गर्व से उठ-उठ,
गगन में गर्व से घिर-घिर
गरज कहती घटाएँ हैं,
नहीं होगा उजाला फिर,
मगर चिर ज्योति में निष्ठा जमाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
तिमिर के राज का ऐसा
कठिन आतंक छाया है,
उठा जो शीश सकते थे
उन्होंने सिर झुकाया है,
मगर विद्रोह की ज्वाला जलाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
प्रलय का सब समाँ बाँधे
प्रलय की रात है छाई,
विनाशक शक्तियों की इस
तिमिर के बीच बन आई,
मगर निर्माण में आशा दृढ़ाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ?
प्रभंजन, मेघ दामिनी ने
न क्या तोड़ा, न क्या फोड़ा,
धरा के और नभ के बीच
कुछ साबित नहीं छोड़ा,
मगर विश्वास को अपने बचाए कौन बैठा है ?
अँधेरी रात में दीपक जलाए कौन बैठा है ? [5 अंक]

1(i). प्रस्तुत काव्यांश में 'दीपक' प्रतीकार्थ है : [1 अंक]

(A) ज्ञान

(B) ज्योति

(C) आशा

(D) शक्ति

सही उत्तर: (C) आशा

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें काव्यांश में अँधेरा, तूफान और बुझते दीप विपरीत स्थितियों को व्यक्त करते हैं। इनके बीच दीपक जलाए रखना हार न मानने का संकेत है।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें कवि आगे निर्माण में आशा दृढ़ाने और अपना विश्वास बचाने की बात करता है। इसी संदर्भ से स्पष्ट होता है कि दीपक आशा का प्रतीक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) ज्ञान के प्रसार की चर्चा नहीं है। (B) ज्योति दीपक का प्रत्यक्ष प्रकाश है, उसका प्रतीकार्थ नहीं। (D) शक्ति व्यापक भाव है; यहाँ निर्माण की आशा अधिक सटीक है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : आशा।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

1(ii). "उठी ऐसी घटा नभ में छिपे सब चाँद और तारे" – पंक्ति में 'चाँद और तारों का छिपना' से अभिप्राय है : [1 अंक]

(A) कोई मार्ग समझ में न आना

(B) विपरीत परिस्थितियों का घिर आना

(C) प्रकाश के साधनों का लुप्त हो जाना

(D) सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना

सही उत्तर: (D) सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें चाँद और तारे रात में प्रकाश देकर सहारा देते हैं। उनके छिपने पर यह सहारा समाप्त हो जाता है, फिर भी कोई व्यक्ति अपना दीप जलाए बैठा है।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें इसलिए चाँद और तारों का छिपना कठिन समय में सहायक साधनों अथवा व्यक्तियों के अनुपस्थित होने का संकेत है। घटा प्रतिकूल परिस्थिति का बिंब है, जबकि प्रश्न विशेष रूप से चाँद और तारों के छिपने का अर्थ पूछता है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) मार्ग न सूझना परिणाम हो सकता है। (B) विपरीत परिस्थितियाँ घटा से व्यक्त हैं। (C) केवल प्रकाश का लुप्त होना शाब्दिक अर्थ है; प्रतीकात्मक संदर्भ में (D) अधिक उपयुक्त है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : सहायक साधनों/व्यक्तियों का न होना।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

1(iii). "तिमिर के राज का ऐसा कठिन आतंक छाया है" – पंक्ति में 'तिमिर के राज' का आशय है : [1 अंक]

(A) अँधेरे का साम्राज्य

(B) प्राकृतिक आपदाएँ

(C) आततायी शासक

(D) सत्ताधारी वर्ग

सही उत्तर: (C) आततायी शासक

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें कवि तिमिर के राज के साथ कठिन आतंक, सिर झुकाने और विद्रोह की ज्वाला का उल्लेख करता है। ये शब्द दमन और उसके प्रतिरोध की स्थिति बनाते हैं।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें जिस शासन के आतंक के कारण सिर उठा सकने वाले भी झुक जाएँ, वह आततायी शासन है। इस संदर्भ में तिमिर का राज आततायी शासक का प्रतीक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) अँधेरे का साम्राज्य केवल शाब्दिक अर्थ है। (B) प्राकृतिक आपदाएँ आतंक और विद्रोह के सामाजिक संदर्भ को पूरा नहीं करतीं। (D) हर सत्ताधारी वर्ग आततायी नहीं होता, इसलिए यह विकल्प कम सटीक है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : आततायी शासक।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

1(iv). विनाशक शक्तियाँ जब सक्रिय हो जाती हैं तब :

कथन I : चारों ओर आतंक का राज रहता है।

कथन II : भय का वातावरण रहता है।

कथन III : अमन-चैन का साम्राज्य रहता है।

उपर्युक्त कथन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है ? [1 अंक]

(A) केवल कथन I और II सही हैं।

(B) केवल कथन I और III सही हैं।

(C) केवल कथन II और III सही हैं।

(D) कथन I, II और III सही हैं।

सही उत्तर: (A) केवल कथन I और II सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें काव्यांश में कठिन आतंक छाने और लोगों के सिर झुकाने का चित्र है। विनाशक शक्तियों की सक्रियता से आतंक तथा भय पैदा होते हैं, अतः कथन I और II पाठ से पुष्ट हैं।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें प्रलय की रात और तोड़-फोड़ का चित्र शांति के विपरीत है। इसलिए अमन-चैन का साम्राज्य रहने वाला

कथन III गलत है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) केवल I और II को सही मानता है। (B) तथा (C) में गलत कथन III शामिल है और एक सही कथन छूटता है। (D) भी III को सही मानने के कारण अस्वीकार्य है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : केवल कथन I और II सही हैं।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

1(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	तिमिर	(i)	बिजली
2.	समाँ	(ii)	धरती
3.	दामिनी	(iii)	दृश्य
4.	धरा	(iv)	अँधेरा

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(ii), 2-(iii), 3-(iv), 4-(i)

(B) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii), 4-(iv)

(C) 1-(i), 2-(ii), 3-(iv), 4-(iii)

(D) 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)

सही उत्तर: (D) 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें तिमिर का अर्थ अँधेरा और समाँ का अर्थ वातावरण या दृश्य है। अतः 1 का मिलान (iv) से तथा 2 का मिलान (iii) से होगा।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें दामिनी बिजली को कहते हैं और धरा धरती का पर्याय है। इसलिए 3 का मिलान (i) तथा 4 का मिलान (ii) से होगा। चारों मिलान एक साथ जाँचना आवश्यक है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में तिमिर को धरती और दामिनी को अँधेरा बताया गया है। (B) में तिमिर को दृश्य कहा गया है। (C) में तिमिर को बिजली बताया गया है। केवल (D) में चारों शब्दार्थ सही हैं।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : 1-(iv), 2-(iii), 3-(i), 4-(ii)।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

---

2. भारतीय आयुर्वेद के अनुसार औषधीय चाय (हर्बल टी) को वैदिक चाय के तौर पर भी जाना जाता है। यह बेहद स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्त्व न सिर्फ शरीर में तरल पदार्थों की पूर्ति करते हैं बल्कि यह दूसरी चाय से भी भिन्न होती है। औषधीय चाय पीकर दिनभर की थकान तो दूर होती ही है, साथ ही यह शरीर को किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचाती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि औषधीय चाय के नियमित सेवन से शरीर की प्रतिरक्षा भी बढ़ाई जा सकती है। शारीरिक प्रतिरक्षा शक्ति मज़बूत होने से शरीर को विभिन्न बीमारियों और संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है। अगर आप लंबे समय से किसी बीमारी से जूझ रहे हैं, तो औषधीय चाय के सेवन से उसके प्रभाव को कम कर सकते हैं। बेहतर स्वास्थ्य के लिए सामान्य चाय की अपेक्षा औषधीय गुणों से भरपूर चाय को ही प्राथमिकता देना बुद्धिमानी बतलाया गया है। इसे पीने से शरीर तो स्वस्थ रहता ही है, दिल और दिमाग भी ताज़गी से भरपूर रहता है।

यह एक प्रकार से आयुर्वेदिक चाय के रूप में भी जानी जाती है और इसमें कैफीन की मात्रा बिलकुल भी नहीं होती है, जबकि दूसरी चाय व कॉफ़ी में कैफीन की अधिक मात्रा होने से शरीर में कई स्वास्थ्य समस्याएँ जन्म ले लेती हैं और धीरे-धीरे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है। औषधीय चाय में ऐसे कई गुण पाए जाते हैं, जिनसे अंदरूनी और बाहरी तौर पर शरीर की सफाई की जा सकती है। शरीर में मौजूद अशुद्धियों को इसके सेवन से काफी हद तक दूर किया जा सकता है। इससे त्वचा का संक्रमण खत्म होता है और त्वचा स्वस्थ भी होती है। अगर नियमित तौर पर हर्बल चाय का सेवन किया जाए, तो मुँहासों की समस्या से भी निजात पाई जा सकती है। यह सोरायसिस और एक्ज़िमा का इलाज करने में भी फायदेमंद है। त्वचा को स्वस्थ बनाए रखने के लिए औषधीय चाय का सेवन किया जा सकता है।

आजकल की व्यस्त और अनियमित जीवन शैली के कारण बहुत से लोग कम उम्र से ही मोटापे का शिकार होने लग जाते हैं। बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएँ हो सकती हैं। वजन घटाने और मोटापा कम करने के लिए इस चाय को काफी लाभदायक माना जाता है। इसमें कुछ ऐसे तत्त्व पाए जाते हैं, जो कैलोरी और वजन को कम करने के लिए मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया को ठीक करते हैं। [10 अंक]

2(i). उपर्युक्त गद्यांश का विषय है : [1 अंक]

(A) औषधीय चाय : एक परिचय

(B) औषधीय चाय के प्रकार

(C) औषधीय चाय और सामान्य चाय में अंतर

(D) वर्तमान जीवन में चाय की आवश्यकता

सही उत्तर: (A) औषधीय चाय : एक परिचय

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें गद्यांश आरंभ में औषधीय चाय का परिचय देता है। इसके बाद पोषक तत्त्वों, प्रतिरक्षा, कैफीन के अभाव, त्वचा तथा वजन से संबंधित लाभों का वर्णन करता है।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें इन सभी अनुच्छेदों को समेटने वाला विषय औषधीय चाय का परिचय है। विषय चुनते समय किसी एक अनुच्छेद की जानकारी के स्थान पर पूरे गद्यांश की व्यापक चर्चा को आधार बनाना चाहिए।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) गलत है क्योंकि चाय के अलग-अलग प्रकार नहीं गिनाए गए हैं। (C) में आया अंतर केवल परिचय का एक अंश है। (D) सामान्य चाय की आवश्यकता पर केंद्रित है, जबकि पाठ औषधीय चाय के गुण बताता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : औषधीय चाय : एक परिचय।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

2(ii). लोग वर्तमान समय में औषधीय चाय के सेवन की ओर क्यों प्रेरित हो रहे हैं ? [1 अंक]

(A) अधिक मुनाफ़ा होने से

(B) चाय का बाज़ार होने से

(C) आवश्यक पेय होने से

(D) स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से

सही उत्तर: (D) स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें गद्यांश औषधीय चाय को बेहतर स्वास्थ्य, प्रतिरक्षा तथा शरीर की ताजगी से जोड़ता है। सामान्य चाय की अपेक्षा इसे प्राथमिकता देना बुद्धिमानी बताया गया है।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें लोग इसके सेवन की ओर इसलिए प्रेरित होते हैं कि वे स्वास्थ्य बनाए रखना और समस्याओं से बचना चाहते हैं। उत्तर का आधार पाठ में दिए गए स्वास्थ्य संबंधी लाभ हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) मुनाफे और (B) बाजार का उल्लेख पाठ में नहीं है। (C) में इसे आवश्यक पेय बताया गया है, पर पाठ ऐसा नहीं कहता। (D) स्वास्थ्य संबंधी प्रेरणा को ठीक व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : स्वास्थ्य के प्रति सचेत होने से।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

2(iii). वैदिक चाय की विशेषता होती है : [1 अंक]

(A) प्राकृतिक होना

(B) स्वादिष्ट होना

(C) औषधीय गुणों से युक्त होना

(D) सरलता से उपलब्ध होना

सही उत्तर: (C) औषधीय गुणों से युक्त होना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें आरंभिक पंक्ति में वैदिक चाय को स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर बताया गया है। आगे पूरा गद्यांश इन्हीं गुणों के स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव समझाता है।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें प्रश्न में वैदिक चाय की पहचान कराने वाली प्रमुख विशेषता चुननी है। औषधीय गुणों से युक्त होना उसके नाम और गद्यांश के केंद्रीय विवेचन दोनों से पुष्ट है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) प्राकृतिक होना पाठ में सीधे नहीं कहा गया। (B) स्वादिष्ट होना उल्लिखित है, किंतु औषधीय चाय की विशिष्ट पहचान का पर्याप्त आधार नहीं है। (D) सरल उपलब्धता की चर्चा नहीं है। इसलिए (C) सर्वाधिक उपयुक्त है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : औषधीय गुणों से युक्त होना।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

2(iv). हर्बल चाय साधारण चाय से भिन्न कैसे है ? [1 अंक]

(A) अधिक स्वादिष्ट होने से

(B) कैफीन नहीं होने से

(C) अधिक लाभदायक होने से

(D) शरीर की सफाई करने से

सही उत्तर: (B) कैफीन नहीं होने से

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार प्रस्तुत पाठ का प्रसंग और उसके शब्द हैं।
- विकल्प चुनने के लिए प्रत्यक्ष अर्थ तथा प्रसंगानुकूल आशय में अंतर करना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में आधार पहचानें दूसरे अनुच्छेद में साफ कहा गया है कि औषधीय चाय में कैफीन बिलकुल नहीं होता, जबकि दूसरी चाय और कॉफी में कैफीन अधिक होता है। यही प्रत्यक्ष तुलना निर्णायक है।

चरण 2: प्रसंग का अर्थ समझें इसलिए साधारण चाय से हर्बल चाय का विशिष्ट अंतर कैफीन का अभाव है। उत्तर चुनते समय पाठ में तुलना बताने वाले शब्दों और दोनों पेयों के बीच स्पष्ट भेद को देखना चाहिए।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) अधिक स्वादिष्ट होने की तुलना पाठ नहीं करता। (C) लाभदायक होना व्यापक निष्कर्ष है। (D) शरीर की सफाई इसका एक गुण है, पर साधारण चाय से सीधे बताए गए अंतर का उत्तर (B) है।

चरण 4: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : कैफीन नहीं होने से।

त्वरित सुझाव: पहले प्रश्न के मुख्य शब्द को रेखांकित करें, फिर उसके निकट की पंक्तियों से अर्थ की पुष्टि करके विकल्प चुनें।

2(ix). शरीर को विभिन्न बीमारियों से बचाया जा सकता है : [1 अंक]

(A) शारीरिक श्रम को महत्त्व देकर

(B) रोज हर्बल चाय का सेवन कर

(C) शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर

(D) दिल, दिमाग को स्वस्थ रख कर

सही उत्तर: (C) शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश में स्पष्ट है कि शारीरिक प्रतिरक्षा शक्ति मज़बूत होने से शरीर को विभिन्न बीमारियों और संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है। इसलिए रोगों से बचाव का सीधा आधार विकसित प्रतिरक्षा शक्ति है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) शारीरिक श्रम का उल्लेख इस प्रसंग में नहीं है। (B) हर्बल चाय का सेवन प्रतिरक्षा बढ़ाने का साधन बताया गया है, जबकि प्रश्न बचाव के मूल आधार को पूछता है। (D) दिल और दिमाग की ताज़गी अलग लाभ है; उसे बीमारियों से सुरक्षा का कारण नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष शारीरिक प्रतिरक्षा को विकसित कर। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

2(v). गद्यांश के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

कथन I : वैदिक चाय ही 'हर्बल टी' है।

कथन II : इससे प्रतिरक्षा तंत्र मज़बूत होता है।

कथन III : बेहतर स्वास्थ्य के लिए औषधीय चाय को प्राथमिकता देना अनिवार्य है।

कथन IV : इस चाय में स्वाद की कमी होती है। [1 अंक]

(A) केवल कथन I सही है।

(B) केवल कथन II और III सही हैं।

(C) केवल कथन I, II, III सही हैं।

(D) केवल कथन I और IV सही हैं।

सही उत्तर: केवल कथन I और II सही हैं; ऐसा कोई विकल्प नहीं दिया गया है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें कथन I सही है, क्योंकि आरंभ में औषधीय चाय को वैदिक चाय और हर्बल टी कहा गया है। कथन II भी सही है, क्योंकि इसके नियमित सेवन से प्रतिरक्षा बढ़ने की बात कही गई है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कथन III में प्राथमिकता देना अनिवार्य कहा गया है, जबकि गद्यांश केवल इसे बुद्धिमानी बताता है। परामर्श को अनिवार्यता मानना उचित नहीं है। कथन IV गलत है, क्योंकि चाय को बेहद स्वादिष्ट कहा गया है। (A) कथन II को छोड़ता है; (B) और (C) गलत कथन III लेते हैं; (D) गलत कथन IV लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन I और II सही हैं; ऐसा कोई विकल्प नहीं दिया गया है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

2(vi). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : वर्तमान समय में जीवन शैली व्यस्त और अनियमित है।

कारण : बहुत से लोग मोटापे के शिकार हो जाते हैं।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, लेकिन कारण गलत है।

(B) कथन सही नहीं है, लेकिन कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें कथन सही है। अंतिम अनुच्छेद में वर्तमान जीवन शैली को व्यस्त और अनियमित कहा गया है। यह

बात गद्यांश में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें कारण में बहुत से लोगों के मोटापे का शिकार होने की बात है। अंतिम अनुच्छेद इस तथ्य की पुष्टि करता है, इसलिए कारण भी सत्य है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध जाँचें कारण भी सही है, क्योंकि बहुत से लोगों के कम उम्र में ही मोटापे का शिकार होने की बात कही गई है। लेकिन मोटापा व्यस्त और अनियमित जीवन शैली का परिणाम बताया गया है। वह जीवन शैली के व्यस्त होने का कारण नहीं है। अतः (A) और (B) एक सत्य कथन को गलत मानते हैं; (D) कारण और परिणाम की दिशा उलटता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

2(vii). वजन घटाने में हर्बल चाय सहायक होती है क्योंकि : [1 अंक]

(A) भूख को कम कर देती है।

(B) कोशिकाओं की मरम्मत होती है।

(C) पाचन तंत्र को मज़बूत बनाती है।

(D) मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है।

सही उत्तर: (D) मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है।

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें अंतिम वाक्य में बताया गया है कि चाय में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं जो कैलोरी और वजन कम करने के लिए मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया को ठीक करते हैं। यही वजन घटाने में सहायक होने का पाठाधारित कारण है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) भूख कम करने का उल्लेख नहीं है। (B) कोशिकाओं की मरम्मत को वजन घटने से नहीं जोड़ा गया है। (C) पाचन तंत्र की मज़बूती भी यहाँ दिया गया कारण नहीं है। इसलिए सामान्य स्वास्थ्य संबंधी धारणाओं के बजाय अंतिम वाक्य के स्पष्ट कारण को चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मेटाबॉलिज़्म की प्रक्रिया ठीक करती है।। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

2(viii). गद्यांश के आधार पर हृदय रोग और मधुमेह जैसी समस्याओं का मूल कारण क्या है ? [1 अंक]

(A) मोटापे का शिकार होना

(B) अनियमित जीवन शैली होना

(C) भोजन में वसा और चीनी अधिक होना

(D) कसरत और योग का अभाव होना

सही उत्तर: (A) मोटापे का शिकार होना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें गद्यांश कहता है कि बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएँ हो सकती हैं। इसलिए प्रश्न में नामित दोनों समस्याओं से सीधे जुड़ा कारण मोटापा है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) अनियमित जीवन शैली मोटापे की पृष्ठभूमि के रूप में दी गई है, जबकि हृदय रोग और मधुमेह के लिए प्रत्यक्ष कारण बढ़ता मोटापा बताया गया है। (C) भोजन में वसा और चीनी तथा (D) कसरत और योग के अभाव की चर्चा गद्यांश में नहीं है। उत्तर पाठ के स्पष्ट कथन से ही लेना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मोटापे का शिकार होना। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

2(x). गद्यांश के अनुसार 'सोरायसिस' और 'एक्ज़िमा' रोग का संबंध शरीर के किस भाग से है ? [1 अंक]

(A) पेट

(B) मुँह

(C) दिल

(D) त्वचा

सही उत्तर: (D) त्वचा

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें दूसरे अनुच्छेद में पहले त्वचा के संक्रमण, त्वचा के स्वस्थ होने और मुँहासों की समस्या की चर्चा है। इसी क्रम में सोरायसिस और एक्ज़िमा के इलाज में लाभ की बात आती है। इससे इन रोगों का संबंध त्वचा से स्पष्ट होता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) पेट का प्रसंग यहाँ नहीं है। (B) मुँह विकल्प को मुँहासों शब्द से जोड़ना गलत होगा, क्योंकि मुँहासे त्वचा की समस्या के रूप में आए हैं। (C) दिल की चर्चा अन्य स्वास्थ्य लाभों में है; सोरायसिस और एक्ज़िमा से उसका संबंध नहीं बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष त्वचा। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

3. मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ ! [5 अंक]

3(i). 'जग-जीवन का भार' से क्या आशय है ? [1 अंक]

(A) व्यक्तिगत जीवन की कठिनाइयाँ
(B) सांसारिक जीवन की समस्याएँ
(C) व्यावहारिक जीवन का संघर्ष
(D) आम जीवन की जद्दोजहद

सही उत्तर: (B) सांसारिक जीवन की समस्याएँ

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें जग का अर्थ संसार और जीवन का भार का अर्थ जीवन के दायित्वों तथा समस्याओं का बोझ है। कवि इस बोझ के रहते हुए भी अपने भीतर प्रेम बनाए रखता है। अगली पंक्ति का फिर भी इसी विपरीत स्थिति को स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) व्यक्तिगत जीवन की कठिनाइयाँ अर्थ को केवल निजी जीवन तक सीमित करती हैं। (C) व्यावहारिक संघर्ष और (D) आम जीवन की जद्दोजहद निकट अर्थ देते हैं, लेकिन जग शब्द के व्यापक सांसारिक आशय को (B) सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सांसारिक जीवन की समस्याएँ। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

3(ii). कवि सांसारिक प्रेम का आधार किसे मानता है ? [1 अंक]

(A) त्याग
(B) स्वार्थ
(C) सहयोग
(D) प्रशंसा

सही उत्तर: (B) स्वार्थ

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें कवि कहता है कि जग उन्हीं को पूछता है जो जग की गाते हैं। अर्थात संसार उन्हें महत्त्व देता है जो उसके अनुकूल बोलते और उसके हितों का समर्थन करते हैं। इस व्यवहार में प्रेम का आधार स्वार्थ दिखाई देता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें कवि इसके विपरीत अपने मन का गान करता है और स्नेह में मग्न रहता है। (A) त्याग और (C) सहयोग का उल्लेख सांसारिक प्रेम के आधार के रूप में नहीं हुआ है। (D) प्रशंसा स्वार्थपूर्ण व्यवहार का एक रूप हो सकती है, लेकिन मूल प्रवृत्ति स्वार्थ है, जिसका संकेत जग की गाने वालों को पूछने में मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वार्थ। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

3(iii). 'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

(A) प्रेम

(B) संवेदना

(C) चाहत

(D) समर्पण

सही उत्तर: (B) संवेदना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर का आधार दिए गए गद्यांश या काव्यांश का स्पष्ट कथन और उसका प्रसंग है।
- विकल्पों में निकट अर्थ होने पर प्रश्न के शब्दों से सबसे सटीक मेल रखने वाला अर्थ चुनना चाहिए।

चरण 1: पाठ से निर्णायक आधार पहचानें कवि अपनी साँसों को ऐसे तार कहता है जिन्हें किसी के स्पर्श ने झंकृत कर दिया है। यह झंकार उसके भीतर जागी भावनाओं और संवेदनशीलता का संकेत है। अतः साँसों के तार जीवन की संवेदना को व्यक्त करते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) प्रेम इस संवेदना को जगाने वाला प्रमुख भाव है, पर तार का सांकेतिक आशय संवेदना है। (C) चाहत केवल इच्छा का सीमित भाव है। (D) समर्पण में अपने को अर्पित करने का भाव होता है, जबकि यहाँ भीतरी भावों के झंकृत होने का बिंब प्रमुख है। इसलिए संवेदना सबसे सटीक विकल्प है।

चरण 3: निष्कर्ष संवेदना। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर पाठ में उसी प्रसंग का निर्णायक वाक्य खोजें और सभी विकल्पों का उससे मिलान करें।

3(iv). प्रस्तुत काव्यांश से कवि के बारे में पता चलता है कि :

कथन I : कवि संवेदनशील है।

कथन II : प्रेम ही कवि के लिए प्रमुख है।

कथन III : प्रेम के सामने संसार का महत्त्व नहीं है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) कथन I और III सही हैं।

(B) कथन I ग़लत है और कथन II, III सही हैं।

(C) कथन I, II और III सही हैं।

(D) कथन I और II सही हैं।

सही उत्तर: (C) कथन I, II और III सही हैं।

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश के आधार पर कवि के व्यक्तित्व और उसके जीवन-मूल्यों को समझना आवश्यक है।
- प्रेम, संवेदनशीलता और लोक-उपेक्षा के संकेतों को एक साथ पढ़कर कथनों की सत्यता जाँची जाती है।

चरण 1: कथनों का पाठ से मिलान साँसों के तारों का किसी के स्पर्श से झंकृत होना कवि की संवेदनशीलता दर्शाता है। जीवन के भार के बीच भी वह प्यार सँजोए है और स्नेह-सुरा का पान करता है। अतः कथन I और II सही हैं।

चरण 2: तीसरे कथन और विकल्पों की जाँच कवि कहता है कि वह जग का ध्यान नहीं करता और अपने मन का गान करता है। इससे स्पष्ट है कि प्रेम और अंतर्मन के सामने संसार का महत्त्व गौण है; अतः कथन III भी सही है। विकल्प (A) में II छूटता है, (B) संवेदनशीलता नकारता है और (D) में III छूटता है।

चरण 3: निष्कर्ष तीनों कथन सही हैं। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: हर कथन के लिए काव्यांश से अलग संकेत खोजिए; किसी सही कथन को छोड़ने वाले विकल्प को हटाइए।

3(v). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : संसार से निरपेक्ष रहने वाला कवि जग-जीवन का भार लिए फिरता है।

कारण : दुनिया अपने व्यंग्य बाणों से और शासन-प्रशासन से चाहे कितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, किंतु कारण ग़लत है।

(B) कथन ग़लत है, किंतु कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या **नहीं** करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन की सत्यता, कारण की सत्यता और दोनों का व्याख्यात्मक संबंध अलग-अलग परखे जाते हैं।
- सांसारिक उपेक्षा का अर्थ समाज से पूर्णतः अलग हो जाना नहीं है।

चरण 1: कथन की जाँच कवि जग का ध्यान न करने की बात कहता है, किंतु साथ ही जग-जीवन का भार भी वहन करता है। इसलिए

संसार के प्रति निरपेक्ष दृष्टि रखते हुए भी जीवन के दायित्व निभाने का कथन सही है।

चरण 2: कारण की जाँच कारण का आशय है कि दुनिया से कष्ट मिलने पर भी मनुष्य उससे पूरी तरह कटकर नहीं रह सकता। काव्यांश में जीवन का भार और प्रेम साथ-साथ उपस्थित हैं। यह मनुष्य के सांसारिक जीवन से जुड़े रहने की स्थिति के अनुकूल है; कारण सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प दुनिया से पूरी तरह न कट सकना ही समझाता है कि कवि निरपेक्ष रहते हुए भी जग-जीवन का भार क्यों ढोता है। इसलिए कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (A) और (B) में एक पक्ष गलत बताया गया है; (C) में व्याख्यात्मक संबंध नकारा गया है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले कथन और कारण को स्वतंत्र रूप से परखिए, फिर देखिए कि कारण कथन के क्यों का उत्तर देता है या नहीं।

---

4. एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है, जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था ? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक। [5 अंक]

4(i). गद्यांश का केन्द्रीय भाव है : [1 अंक]

(A) कबीर का परिचय

(B) शिरीष की विशेषता

(C) शिरीष की उपयोगिता

(D) शिरीष का प्रभाव

सही उत्तर: (B) शिरीष की विशेषता

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव वह विचार है जो पूरे अनुच्छेद में प्रमुखता से विकसित होता है।
- उदाहरण और तुलना मुख्य विषय को स्पष्ट करते हैं; वे स्वयं आवश्यक रूप से केंद्रीय विषय नहीं होते।

चरण 1: मुख्य विषय पहचानना अनुच्छेद का आरंभ शिरीष को अद्भुत अवधूत कहने से होता है। आगे उसका सुख-दुःख में न हारना, तपती धरती पर भी कोमल फूल उगाना और मस्त रहना बताया गया है। ये सभी उसके विशेष स्वभाव को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण कबीर का उल्लेख अंत में शिरीष के स्वभाव को समझाने के लिए आया है; इसलिए (A) मुख्य भाव नहीं है। वृक्ष के किसी व्यावहारिक उपयोग का विवरण नहीं है, इसलिए (C) गलत है। दूसरों पर उसके प्रभाव का वर्णन भी प्रमुख नहीं है, इसलिए (D) उपयुक्त नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश का केंद्रीय भाव शिरीष की विशेषता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: आरंभ से अंत तक बार-बार उभरने वाले विषय को चुनिए; अंतिम उदाहरण को पूरे गद्यांश का विषय मत मानिए।

4(ii). शिरीष को अद्भुत कहा गया है : [1 अंक]

(A) हँसते मुस्कुराते रहने के कारण

(B) कठिनाइयों में अडिग रहने के कारण

(C) दुःख-सुख में सम भाव से रहने के कारण

(D) भयंकर गरमी को झेलने के कारण

सही उत्तर: (C) दुःख-सुख में सम भाव से रहने के कारण

हल:

अवधारणा:

- अवधूत सांसारिक उतार-चढ़ाव से ऊपर उठकर मस्त रहने वाला व्यक्ति होता है।
- यहाँ शिरीष के वर्णन में सुख और दुःख दोनों स्थितियों के प्रति समान दृष्टि निर्णायक है।

चरण 1: निर्णायक वाक्य पहचानना लेखक शिरीष को अद्भुत अवधूत कहने के तुरंत बाद बताता है कि दुःख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। वह प्रतिकूल वातावरण में भी अपनी मस्ती और सरसता बनाए रखता है। इस प्रकार उसके अद्भुत होने का व्यापक आधार सुख-दुःख में समभाव है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का अंतर समझना (A) केवल बाहरी प्रसन्नता बताता है। (B) कठिनाइयों में दृढ़ता को बताता है, पर सुख और दुःख दोनों में समान रहने का पूरा भाव नहीं समेटता। (D) केवल गरमी सहने की एक परिस्थिति तक सीमित है। (C) अवधूत-स्वभाव का सबसे व्यापक अर्थ व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष दुःख-सुख में समभाव से रहता है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अद्भुत अवधूत के ठीक बाद दिए गए सुख-दुःख वाले वाक्य को आधार बनाकर सबसे व्यापक विकल्प चुनिए।

4(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए। [1 अंक]

(A) शिरीष वायुमंडल से भोग्य पदार्थ ग्रहण करता है।

(B) शिरीष एक हरा-भरा पौधा है।

(C) शिरीष पाताल की गहराइयों से रस प्राप्त करता है।

(D) शिरीष वनस्पतिशास्त्री का प्रिय पौधा है।

सही उत्तर: (A) शिरीष वायुमंडल से भोग्य पदार्थ ग्रहण करता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश-आधारित प्रश्न में उत्तर वही होना चाहिए जिसकी पुष्टि पाठ के स्पष्ट कथन से होती है।
- बाहरी सामान्य ज्ञान की अपेक्षा दिए गए अंश की सूचना निर्णायक रहती है।

चरण 1: स्पष्ट सूचना खोजना वनस्पतिशास्त्री के अनुसार शिरीष उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। लेखक भी इस बात को स्वीकार करते हुए उसके कोमल तंतुजाल और सुकुमार केसर का उल्लेख करता है। इसलिए वायुमंडल से पोषण ग्रहण करने वाला कथन पाठ से समर्थित है।

चरण 2: शेष कथनों को जाँचना (B) शिरीष को हरा-भरा पौधा कहता है, जबकि यह गद्यांश की दी गई विशिष्ट सूचना नहीं है। (C) में पाताल से रस लेने की बात है, जो वायुमंडल वाली सूचना के विपरीत है। (D) में वनस्पतिशास्त्री की पसंद बताई गई है, जिसका उल्लेख नहीं हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष वायुमंडल से भोग्य पदार्थ ग्रहण करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: गद्यांश में वनस्पतिशास्त्री द्वारा बताई गई सूचना को रेखांकित कीजिए और उसी से विकल्प मिलाइए।

4(iv). "न ऊधो का लेना, न माधो का देना" – का आशय है : [1 अंक]

(A) सदैव प्रसन्न रहना

(B) क्रय-विक्रय न करना

(C) लेन-देन का कार्य न करना

(D) निर्लिप्त भाव से जीवन जीना

सही उत्तर: (D) निर्लिप्त भाव से जीवन जीना

हल:

अवधारणा:

- मुहावरे का अर्थ उसके शब्दों के शाब्दिक अर्थ से अलग हो सकता है।
- प्रसंग में शिरीष का अवधूत-स्वभाव और संसार के प्रति निर्लिप्तता प्रमुख हैं।

चरण 1: प्रसंगानुकूल भाव समझना न ऊधो का लेना, न माधो का देना का आशय दूसरों के स्वार्थपूर्ण झंझटों और सांसारिक उलझनों से मुक्त रहना है। शिरीष अपनी मस्ती में रहता है और सुख-दुःख से विचलित नहीं होता। इसलिए यहाँ निर्लिप्त होकर जीने का भाव व्यक्त हुआ है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना (A) प्रसन्न रहने की एक मनोदशा बताता है, पर मुहावरे की अनासक्ति का पूरा अर्थ नहीं देता। (B) खरीदने-बेचने और (C) लेन-देन का शाब्दिक अर्थ लेते हैं। गद्यांश व्यापार की चर्चा नहीं करता। (D) का निर्लिप्त जीवन अवधूत के प्रसंग से सीधे मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुहावरे का आशय निर्लिप्त भाव से जीवन जीना है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मुहावरे के लेना-देना शब्दों को व्यापार न समझिए; आसपास के अवधूत और मस्ती के संकेतों से अर्थ निकालिए।

4(v). "मौज में आठों याम मस्त रहते हैं" – पंक्ति में प्रयुक्त 'याम' शब्द से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

(A) मिनट

(B) घंटा

(C) दिन

(D) पहर

सही उत्तर: (D) पहर

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ का चुनाव वाक्य के प्रसंग और प्रचलित अभिव्यक्ति के आधार पर किया जाता है।
- आठों याम का अर्थ दिन-रात के सभी आठ पहरों में, अर्थात हर समय है।

चरण 1: याम का अर्थ स्पष्ट करना याम का अर्थ पहर होता है। एक पहर लगभग तीन घंटे का होता है और दिन-रात में मिलाकर आठ पहर होते हैं। इसीलिए आठों याम मस्त रहने का आशय पूरे दिन-रात अपनी मस्ती बनाए रखना है।

चरण 2: अन्य विकल्प हटाना (A) मिनट और (B) घंटा समय की अलग इकाइयाँ हैं; याम इनका पर्याय नहीं है। (C) दिन चुनने से आठों याम का प्रचलित दिन-रात वाला अर्थ नहीं बनता। (D) पहर रखने पर वाक्य का अर्थ आठों पहर अर्थात हर समय होता है, जो शिरीष की निरंतर मस्ती से मेल खाता है।

चरण 3: निष्कर्ष याम का अर्थ पहर है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: आठों याम को आठों पहर में बदलकर वाक्य पढ़िए; पूरे दिन-रात का अर्थ तुरंत स्पष्ट हो जाएगा।

5(i). घर में दावत चलते समय यशोधर बाबू संध्या करने क्यों चले गए ? [1 अंक]

(A) प्रभु का आशीर्वाद लेने के लिए

(B) शोर-शराबे से बचने के लिए

(C) प्रभु का धन्यवाद व्यक्त करने के लिए

(D) पार्टी से बचने के लिए

सही उत्तर: (D) पार्टी से बचने के लिए

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के व्यवहार का कारण उसके स्वभाव और कथा के तत्काल प्रसंग से समझा जाता है।
- यशोधर बाबू के परंपरागत जीवन-मूल्यों और परिवार की आधुनिक उत्सव-शैली के बीच दूरी है।

चरण 1: दावत के प्रसंग को समझना घर में विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ की पार्टी का आधुनिक ढंग यशोधर बाबू को सहज नहीं लगता। वे इस आयोजन और उसकी गतिविधियों से अपने को अलग अनुभव करते हैं। ऐसे में संध्या करना उन्हें पार्टी से अलग होने का अवसर देता है।

चरण 2: विकल्पों में सही कारण चुनना यहाँ संध्या का तत्काल उद्देश्य पार्टी से बचना है। (A) आशीर्वाद लेना और (C) धन्यवाद देना धार्मिक क्रिया के संभावित सामान्य उद्देश्य हैं, पर इस प्रसंग की मनःस्थिति नहीं बताते। (B) केवल शोर से बचना बताता है, जबकि उनकी असहजता समूची पार्टी की शैली से है। इसलिए (D) सबसे उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू पार्टी से बचने के लिए संध्या करने चले गए। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पात्र की धार्मिक क्रिया का सामान्य उद्देश्य नहीं, उस समय की असहजता और पूरे आयोजन के प्रति उसका भाव देखिए।

5(ii). सिन्धु का इलाका किससे मिलता-जुलता है ? [1 अंक]

(A) बाड़मेर से

(B) राजस्थान से

(C) जैसलमेर से

(D) बीकानेर से

सही उत्तर: (B) राजस्थान से

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें लेखक सिन्धु के भूभाग की तुलना राजस्थान के इलाके से करता है। यह तुलना दोनों प्रदेशों के भौगोलिक परिवेश और दृश्य रूप की समानता बताती है। प्रश्न किसी एक नगर का नाम नहीं, पूरे इलाके का साम्य पूछता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें बाड़मेर (A), जैसलमेर (C) और बीकानेर (D) राजस्थान के विशिष्ट स्थान हैं। पाठ में तुलना के लिए व्यापक प्रदेश राजस्थान का उल्लेख है, इसलिए इन नगरों को चुनना कथन का अनावश्यक संकुचन होगा।

चरण 3: निष्कर्ष सिन्धु का इलाका राजस्थान से मिलता-जुलता है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सिन्धु की तुलना एक पूरे प्रदेश राजस्थान से है; बाड़मेर, जैसलमेर और बीकानेर नगरों के नाम हैं। प्रदेश और नगर का यह अंतर पहचानकर विकल्प चुनें।

5(iii). बसंत पाटील को लेखक द्वारा मित्र बनाए जाने का कारण नहीं है : [1 अंक]

(A) वह मेधावी था

(B) उसका शांत स्वभाव था

(C) वह कक्षा का मॉनिटर था

(D) वह बड़ी जाति से था

सही उत्तर: (D) वह बड़ी जाति से था

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'जूझ' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें बसंत पाटील पढ़ाई में होशियार और शांत स्वभाव का विद्यार्थी था। वह कक्षा का मॉनिटर भी था। आनंदा उसकी पढ़ने की लगन और अच्छे व्यवहार से प्रभावित होकर उसके निकट आया; यह मित्रता पढ़ाई में सहायक बनी।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें मेधावी होना (A), शांत स्वभाव (B) और मॉनिटर होना (C) उसके व्यक्तित्व तथा कक्षा में उसकी स्थिति से जुड़े तथ्य हैं। बड़ी जाति से होना (D) आनंदा के उसे मित्र बनाने का आधार नहीं है। प्रश्न में निषेध होने से यही विकल्प चुनना है।

चरण 3: निष्कर्ष बसंत पाटील का बड़ी जाति से होना मित्रता का कारण नहीं था। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न का मुख्य शब्द पहले रेखांकित करें और पाठ के उसी प्रसंग से मिलाकर विकल्प चुनें; निषेध वाले प्रश्न में गलत कारण ढूँढ़ें।

5(iv). कुंड में पानी के प्रबंध हेतु किसकी व्यवस्था थी ? [1 अंक]

(A) नहर की

(B) तालाब की

(C) कुएँ की

(D) नदियों की

सही उत्तर: (C) कुएँ की

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें मोहनजोदड़ो के महाकुंड के वर्णन में लेखक उसकी सुव्यवस्थित बनावट के साथ पानी की व्यवस्था भी बताता है। कुंड के पास स्थित कुएँ से उसमें पानी भरने का प्रबंध था। यह नगरवासियों की उपयोगी जलव्यवस्था को स्पष्ट करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें नहर (A), तालाब (B) और नदियाँ (D) इस कुंड को भरने की पाठ में बताई गई व्यवस्था नहीं हैं।

आसपास नदी होने के सामान्य ज्ञान के आधार पर उत्तर चुनना उचित नहीं; प्रश्न विशेष रूप से कुंड की व्यवस्था पूछता है।

चरण 3: निष्कर्ष कुंड में पानी के प्रबंध के लिए कुएँ की व्यवस्था थी। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: महाकुंड को भरने का स्रोत याद करते समय उसके पास बने कुएँ का संबंध जोड़ें; नगर के निकट नदी होने को कुंड की जलव्यवस्था न समझें।

5(ix). मूल संस्कारों से आधुनिका न होते हुए यशोधर बाबू की पत्नी के आधुनिका बनने का कारण इनमें से नहीं है : [1 अंक]

(A) बच्चों का पढ़-लिखकर ऊँचा वेतनमान पाना

(B) संयुक्त परिवार में पति द्वारा कभी पक्ष न लिया जाना

(C) बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी

(D) संयुक्त परिवार में आचार-व्यवहार के बंधनों में रहना

सही उत्तर: (D) संयुक्त परिवार में आचार-व्यवहार के बंधनों में रहना

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक नहीं हैं। बच्चों की उन्नति और उनकी तरफदारी की मातृसुलभ विवशता उन्हें नए ढंग अपनाने की ओर ले जाती है। पति द्वारा संयुक्त परिवार में उनका पक्ष न लिया जाना भी उनके बदले हुए रुख की पृष्ठभूमि है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें बच्चों का ऊँचा वेतनमान (A), पति द्वारा पक्ष न लिया जाना (B) और बच्चों की तरफदारी की मजबूरी (C) उनके परिवर्तन से जुड़े कारण हैं। आचार-व्यवहार के पुराने बंधनों में रहना (D) परंपरागत जीवन की स्थिति है; इसे आधुनिका बनने का कारण नहीं कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष संयुक्त परिवार में आचार-व्यवहार के बंधनों में रहना आधुनिका बनने का कारण नहीं है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न का मुख्य शब्द पहले रेखांकित करें और पाठ के उसी प्रसंग से मिलाकर विकल्प चुनें; निषेध वाले प्रश्न में गलत कारण ढूँढ़ें।

5(v). दफ़्तर से निकलकर यशोधर बाबू कहाँ चले जाते थे ? [1 अंक]

(A) क्वार्टर में

(B) बिरला मंदिर में

(C) गोल मार्केट में

(D) पार्क में

सही उत्तर: (B) बिरला मंदिर में

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें यशोधर बाबू के दैनिक जीवन में धार्मिक आस्था और पुरानी जीवनशैली का विशेष स्थान है। दफ़्तर के बाद बिरला मंदिर जाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा है। पाठ का यह प्रसंग उनके संस्कारों और घर के नए वातावरण से उनके मन के अंतर को समझने में मदद करता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें क्वार्टर (A) उनका निवास है, पर प्रश्न दफ़्तर से निकलने के बाद उनके जाने के विशिष्ट स्थान का है। गोल मार्केट (C) और पार्क (D) उस प्रसंग के उत्तर नहीं हैं। इसलिए सामान्य संभावनाओं की जगह पाठ में उल्लिखित बिरला मंदिर चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष दफ़्तर से निकलकर यशोधर बाबू बिरला मंदिर चले जाते थे। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: यशोधर बाबू की दिनचर्या को क्रम से याद करें: दफ़्तर के बाद बिरला मंदिर। उनके धार्मिक संस्कार इस स्थान का नाम याद रखने में मदद करेंगे।

5(vi). 'जूझ' कहानी का नायक आनंदा कक्षा में चव्हाण के लड़के द्वारा गमछा छीने जाने पर रुआँसा क्यों हो गया ? [1 अंक]

(A) गमछे के फट जाने के कारण

(B) कक्षा के छात्रों के हँसने के कारण

(C) गमछा फट जाने के संभावित भय के कारण

(D) पिता द्वारा की जाने वाली संभावित पिटाई के कारण

सही उत्तर: (C) गमछा फट जाने के संभावित भय के कारण

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'जूझ' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें कक्षा में चव्हाण का लड़का आनंदा का गमछा छीनकर उसे परेशान करता है। आनंदा अपनी साधारण वस्तु को लेकर असहाय अनुभव करता है। उसे चिंता होती है कि इस खींचतान और शरारत में उसका गमछा फट सकता है; इसी आशंका से वह रुआँसा होता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें गमछा वास्तव में फट जाने का कथन (A) संभावित घटना को घटित घटना बना देता है। छात्रों का हँसना (B) अपमान का वातावरण बताता है, पर यहाँ निर्णायक कारण नहीं। पिता की संभावित पिटाई (D) की जगह प्रश्न का सीधा कारण गमछे के फटने का भय (C) है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा गमछा फट जाने के संभावित भय से रुआँसा हो गया था। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: गमछा फटने की आशंका और वास्तव में फट जाने में अंतर करें। आनंदा मन में भावी खींचतान सोचकर रुआँसा होता है, इसलिए संभावित भय वाला विकल्प चुनें।

5(vii). छोटे टीलों पर बनी बस्ती को क्या कहकर पुकारा जाता था ? [1 अंक]

(A) नीचे क्षेत्र

(B) नीचा घर

(C) नीचा नगर

(D) पुराना घर

सही उत्तर: (C) नीचा नगर

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें मोहनजोदड़ो के वर्णन में बस्ती के भागों की पहचान उनकी स्थिति के अनुसार की गई है। ऊँचे हिस्से से अलग छोटे टीलों पर बसी आबादी को नीचा नगर कहा गया है। यह नाम पूरे बस्ती वाले क्षेत्र को सूचित करता है, किसी एक भवन को नहीं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें नीचे क्षेत्र (A) साधारण दिशासूचक पद है और नीचा घर (B) किसी एक मकान का अर्थ देता है। पुराना घर (D) भी बस्ती का प्रचलित नाम नहीं है। पाठ में प्रयुक्त निश्चित नाम नीचा नगर (C) होने के कारण यही उपयुक्त उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटे टीलों पर बनी बस्ती को नीचा नगर कहा जाता था। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: छोटे टीलों पर बनी बस्ती के लिए नीचा नगर नाम याद करें। नगर पूरी बस्ती को बताता है, जबकि घर केवल एक भवन को; इसी अंतर से विकल्प छाँटें।

5(viii). लेखक के पिता गाँव में सबसे पहले कोल्हू क्यों चलाते थे ? [1 अंक]

(A) काम खत्म करने के लिए

(B) पैसा बचाने के लिए

(C) बच्चे पर शासन के लिए

(D) ईख की अच्छी कीमत के लिए

सही उत्तर: (D) ईख की अच्छी कीमत के लिए

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न 'जूझ' पाठ के प्रसंग और उसके सटीक तथ्य की पहचान पर आधारित है। उत्तर देते समय प्रश्न में प्रयुक्त कारण, स्थान और निषेध जैसे संकेतों को ध्यान में रखना चाहिए।
- सही विकल्प का आधार पाठ में वर्णित घटना या विवरण है; केवल सामान्य अनुमान अथवा पात्र के किसी दूसरे व्यवहार से निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए।

चरण 1: पाठ के प्रसंग को पहचानें लेखक के पिता चाहते थे कि उनकी ईख की पेराई गाँव में दूसरों से पहले हो जाए। पहले तैयार माल को बाजार में अच्छे भाव मिलने की संभावना रहती थी। इस आर्थिक लाभ की इच्छा से वे सबसे पहले कोल्हू चलाने का प्रयत्न करते थे।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें काम जल्दी समाप्त करना (A) पेराई का परिणाम हो सकता है, किंतु पूछा गया मुख्य उद्देश्य नहीं है। पैसा बचाना (B) खर्च घटाने की बात है, जबकि प्रसंग बेहतर कीमत पाने का है। बच्चे पर शासन करना (C) पिता के व्यवहार से जुड़ा अलग मुद्दा है। अतः ईख की अच्छी कीमत (D) सही है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के पिता ईख की अच्छी कीमत पाने के लिए सबसे पहले कोल्हू चलाते थे। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: सबसे पहले पेराई करने को बाजार में पहले पहुँचने और अच्छी कीमत मिलने से जोड़ें। यहाँ उद्देश्य बेहतर भाव पाना है, केवल जल्दी काम निपटाना नहीं।

5(x). यशोधर बाबू चाहते थे कि उनके बच्चे : [1 अंक]

(A) दफ़्तर पैदल जाएँ

(B) पैसा खर्च करें

(C) उनसे पूछ कर काम करें

(D) अपना निर्णय स्वयं लें

सही उत्तर: (C) उनसे पूछ कर काम करें

हल:

अवधारणा:

- पारिवारिक निर्णय और पीढ़ियों का अंतर।
- दिए गए विकल्पों का मिलान पाठ के प्रसंग और निर्धारित संकल्पना से करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और संकल्पना समझें यशोधर बाबू परंपरागत पारिवारिक मूल्यों को मानते हैं। वे परिवार में अपने अनुभव और पिता की भूमिका को महत्त्व देते हैं। इसलिए उनकी अपेक्षा है कि बच्चे कोई काम करने से पहले उनसे सलाह या अनुमति लें।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें बच्चों का उनसे पूछे बिना निर्णय लेना उन्हें असहज करता है। दफ़्तर पैदल जाना उनकी निजी आदत है, बच्चों के लिए मुख्य अपेक्षा नहीं। पैसा खर्च करना भी उनकी इच्छा नहीं है। अपना निर्णय स्वयं लेना बच्चों की आधुनिक सोच है, जबकि पिता उनसे पूछकर काम करने की अपेक्षा रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: उनसे पूछ कर काम करें।

त्वरित सुझाव: यशोधर बाबू की अपनी आदत और बच्चों से उनकी अपेक्षा को अलग पहचानें।

6(i). मुद्रित माध्यमों में लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित शृंखला कही जाती है : [1 अंक]

(A) स्तंभ लेखन

(B) समाचार लेखन

(C) सूचना लेखन

(D) सृजनात्मक लेखन

सही उत्तर: (A) स्तंभ लेखन

हल:

अवधारणा:

- स्तंभ लेखन की पहचान।
- दिए गए विकल्पों का मिलान पाठ के प्रसंग और निर्धारित संकल्पना से करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और संकल्पना समझें मुद्रित माध्यम में किसी लोकप्रिय लेखक की नियमित रूप से प्रकाशित लेखमाला स्तंभ कहलाती है। उसका विषय, स्थान अथवा प्रकाशन की आवृत्ति प्रायः निश्चित होती है। पाठक लेखक की विशिष्ट दृष्टि और शैली के कारण उसे नियमित पढ़ते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें समाचार लेखन मुख्यतः ताज़ी घटनाओं की तथ्यपरक जानकारी देता है। सूचना लेखन केवल आवश्यक जानकारी प्रस्तुत करने का व्यापक कार्य है। सृजनात्मक लेखन रचनाशील साहित्य का व्यापक वर्ग है। इनमें से कोई पद लोकप्रिय लेखक के लेखों की नियमित शृंखला का विशिष्ट नाम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: स्तंभ लेखन।

त्वरित सुझाव: नियमित शृंखला और लेखक की निजी पहचान साथ हों तो स्तंभ लेखन पहचानें।

6(ii). आर्थिक पत्रकारिता से जुड़े पत्रकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती है : [1 अंक]

(A) इस क्षेत्र से जुड़ी तकनीकी शब्दावली को समझना

(B) इस क्षेत्र से जुड़ी तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करना

(C) देश की अर्थव्यवस्था का ठीक से विश्लेषण करना

(D) इस क्षेत्र से जुड़ी शब्दावली को पाठक वर्ग के समझने लायक बनाना

सही उत्तर: (D) इस क्षेत्र से जुड़ी शब्दावली को पाठक वर्ग के समझने लायक बनाना

हल:

अवधारणा:

- आर्थिक पत्रकारिता की भाषा।
- दिए गए विकल्पों का मिलान पाठ के प्रसंग और निर्धारित संकल्पना से करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और संकल्पना समझें आर्थिक पत्रकारिता में बजट, वित्त, निवेश और बाज़ार जैसे विषय आते हैं। इनकी तकनीकी शब्दावली विशेषज्ञों के लिए परिचित होती है, पर सामान्य पाठक के लिए कठिन हो सकती है। पत्रकार का काम इस जानकारी को पाठक के लिए स्पष्ट और बोधगम्य बनाना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें तकनीकी शब्द समझना आवश्यक तैयारी है, इसलिए (A) पूरी चुनौती नहीं बताता। केवल तकनीकी शब्दों का प्रयोग करना (B) पाठक की कठिनाई बढ़ा सकता है। अर्थव्यवस्था का विश्लेषण (C) आवश्यक है, पर यहाँ सबसे बड़ी संप्रेषणगत चुनौती जटिल शब्दावली को सरल रूप में पाठक तक पहुँचाना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है: इस क्षेत्र से जुड़ी शब्दावली को पाठक वर्ग के समझने लायक बनाना।

त्वरित सुझाव: विशेषज्ञ विषय की पत्रकारिता में पाठक की समझ तक पहुँचने की चुनौती देखें।

6(iii). पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं ? [1 अंक]

(A) एक
(B) दो
(C) तीन
(D) चार

सही उत्तर: (C) तीन

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों के कार्यगत प्रकार।
- दिए गए विकल्पों का मिलान पाठ के प्रसंग और निर्धारित संकल्पना से करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और संकल्पना समझें पत्रकारीय लेखन के संदर्भ में पत्रकारों को तीन प्रमुख प्रकारों में रखा जाता है: पूर्णकालिक पत्रकार, अंशकालिक पत्रकार और स्वतंत्र पत्रकार। यह वर्गीकरण किसी संस्था से उनके संबंध तथा काम करने की व्यवस्था पर आधारित है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन का नियमित कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार सीमित या निर्धारित काम करता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संगठन का नियमित कर्मचारी हुए बिना अलग-अलग माध्यमों के लिए लिख सकता है। इसलिए एक, दो और चार की संख्याएँ इस पाठ्यपुस्तकीय वर्गीकरण से मेल नहीं खातीं।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है: तीन।

त्वरित सुझाव: प्रकार गिनने से पहले पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र नाम याद करें।

6(iv). पत्रकारिता का मूल तत्त्व है : [1 अंक]

(A) सूचना देना
(B) प्रेरणा देना
(C) ख़बर छापना
(D) मनोरंजन करना

सही उत्तर: (A) सूचना देना

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का सूचना धर्म।
- दिए गए विकल्पों का मिलान पाठ के प्रसंग और निर्धारित संकल्पना से करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और संकल्पना समझें पत्रकारिता का मूल उद्देश्य जनता को महत्त्वपूर्ण घटनाओं, स्थितियों और विषयों की विश्वसनीय सूचना देना है। इसी सूचना से पाठक अपने आसपास की दुनिया को समझता है और विवेकपूर्ण राय बना सकता है। इसीलिए सूचना देना उसका आधारभूत तत्त्व है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें प्रेरणा देना और मनोरंजन करना कुछ पत्रकारितागत प्रस्तुतियों के प्रभाव या सहायक उद्देश्य हो सकते हैं, पर वे मूल तत्त्व नहीं हैं। ख़बर छापना मुद्रित माध्यम की एक क्रिया है; पत्रकारिता रेडियो, टेलीविज़न और अन्य माध्यमों में भी होती है। इसलिए (C) का दायरा मूल तत्त्व के लिए बहुत संकीर्ण है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है: सूचना देना।

त्वरित सुझाव: मूल तत्त्व पूछे जाने पर सभी समाचार माध्यमों में समान उद्देश्य पहचानें।

6(v). संचार प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा कहलाती है : [1 अंक]

(A) बाधा

(B) शोर

(C) अवरोध

(D) रुकावट

सही उत्तर: (B) शोर

हल:

अवधारणा:

- संचार में शोर।
- दिए गए विकल्पों का मिलान पाठ के प्रसंग और निर्धारित संकल्पना से करना चाहिए।

चरण 1: प्रसंग और संकल्पना समझें संचार प्रक्रिया में प्रेषक का संदेश किसी माध्यम से प्राप्तकर्ता तक पहुँचता है। इस यात्रा में संदेश की स्पष्टता, पहुँच या सही अर्थ ग्रहण करने में जो व्यवधान पड़ता है, उसे संचार की तकनीकी शब्दावली में शोर कहते हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच करें शोर केवल तेज़ आवाज़ नहीं है; यह संदेश ग्रहण करने में आने वाली किसी भी प्रकार की बाधा का पारिभाषिक नाम है। बाधा, अवरोध और रुकावट साधारण भाषा में व्यवधान बताते हैं, पर इस प्रश्न में संचार प्रक्रिया का स्वीकृत तकनीकी पद पूछा गया है। इसलिए (A), (C) और (D) के स्थान पर (B) चुना जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है: शोर।

त्वरित सुझाव: संचार के प्रश्न में बाधा का तकनीकी नाम शोर याद रखें, केवल ध्वनि नहीं।

7(क). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

ट्रेन में प्रिय लेखक से भेंट [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ी एक सुसंगत घटना और निजी अनुभूति प्रस्तुत की जाती है। दृश्य, संवाद और संवेदना लेख को प्रभावी बनाते हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में शीर्षक, स्पष्ट आरंभ, घटनाक्रम और स्वाभाविक अंत रखें। भाषा सरल और वर्णन विषय के अनुरूप होना चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की दिशा लेखक से अनपेक्षित भेंट को एक छोटी, विश्वसनीय घटना के रूप में प्रस्तुत करना है। संवाद के माध्यम से पढ़ने और लिखने की प्रेरणा सामने आनी चाहिए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना यात्रा का दृश्य, लेखक की पहचान, संकोच के बाद बातचीत और उससे मिली प्रेरणा को क्रम से रखें। अनावश्यक जीवनवृत्त के स्थान पर अपनी अनुभूति को केंद्र बनाएँ। प्रथम पुरुष में लिखा गया अनुभव पाठक को घटना से जोड़ता है। वर्णन की प्रत्येक बात केंद्रीय विषय को आगे बढ़ाए। अंत में उपदेश जोड़ने की जगह घटना से उपजी भावना व्यक्त करें। चुने हुए दृश्य और छोटे वाक्य रचना को सहज रखते हैं तथा सीमित शब्दों में अनुभव स्पष्ट करते हैं।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख ट्रेन में प्रिय लेखक से भेंट

ट्रेन खिड़की के बाहर दौड़ते खेतों को पीछे छोड़ रही थी। मैं अपने प्रिय लेखक की कहानी पढ़ रहा था। तभी सामने बैठे यात्री पर नज़र पड़ी। पुस्तक के पिछले पृष्ठ पर छपा चित्र देखा तो आश्चर्य से मेरी आँखें फैल गईं। वही लेखक मेरे सामने थे!

संकोच छोड़कर मैंने नमस्कार किया और पुस्तक दिखाई। वे मुसकराए और मेरा नाम पूछा। मैंने बताया कि उनकी कहानियाँ मुझे सामान्य लोगों के सुख-दुख समझना सिखाती हैं। उन्होंने कहा कि अच्छा लिखने के लिए आसपास के जीवन को ध्यान से देखना चाहिए। हमने पढ़ने की आदत पर भी बातचीत की।

अगले स्टेशन पर उतरते समय उन्होंने शुभकामनाएँ दीं। यात्रा समाप्त होने से पहले ही मुझे कहानियों से कहीं अधिक मूल्यवान प्रेरणा मिल चुकी थी।

चरण 4: निष्कर्ष इस रचना में घटना का क्रम, परिवेश और उससे उत्पन्न अनुभूति एक साथ उभरते हैं। शीर्षक के अनुरूप आरंभ और स्वाभाविक समापन विषय को पूर्णता देते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले चार संकेत लिख लें: दृश्य, घटना, प्रतिक्रिया और अंतिम अनुभूति। फिर इन्हीं को जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सुसंगत लेख बनाएँ।

7(ख). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्कूल से छुट्टी के समय अचानक बारिश का होना [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ी एक सुसंगत घटना और निजी अनुभूति प्रस्तुत की जाती है। दृश्य, संवाद और संवेदना लेख को प्रभावी बनाते हैं।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में शीर्षक, स्पष्ट आरंभ, घटनाक्रम और स्वाभाविक अंत रखें। भाषा सरल और वर्णन विषय के अनुरूप होना चाहिए।

चरण 1: विषय और प्रस्तुति की दिशा अचानक हुई वर्षा का अनुभव दृश्य, ध्वनि और भावनाओं के सहारे जीवंत बनाना है। घटना में आरंभ, छोटा परिवर्तन और सार्थक समापन होना चाहिए।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना छुट्टी की घंटी से शुरुआत करें। बादलों और वर्षा का दृश्य दिखाएँ, बच्चों की प्रतिक्रियाएँ जोड़ें और किसी छोटे मानवीय व्यवहार से अनुभव को अर्थ दें। प्रथम पुरुष में लिखा गया अनुभव पाठक को घटना से जोड़ता है। वर्णन की प्रत्येक बात केंद्रीय विषय को आगे बढ़ाए। अंत में उपदेश जोड़ने की जगह घटना से उपजी भावना व्यक्त करें। चुने हुए दृश्य और छोटे वाक्य रचना को सहज रखते हैं तथा सीमित शब्दों में अनुभव स्पष्ट करते हैं।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख स्कूल से छुट्टी के समय अचानक बारिश का होना

छुट्टी की घंटी बजते ही हम बस्ते सँभालकर बाहर दौड़े। अभी सुबह तक आसमान साफ था, पर अब काले बादल छा गए थे। अचानक मोटी बूँदें गिरने लगीं। देखते ही देखते विद्यालय का मैदान पानी से चमक उठा।

कुछ बच्चे बरामदे में लौट आए, कुछ खुशी से हथेलियाँ फैलाकर बारिश पकड़ने लगे। मिट्टी की सोंधी गंध हवा में घुल गई। मेरा मित्र बिना छाते के खड़ा था। मैंने उसे अपने छाते के नीचे बुला लिया। छोटे छाते में दोनों के कंधे भीग रहे थे, लेकिन हँसी रुक नहीं रही थी।

रास्ते में हमने एक छोटे बच्चे को पानी भरे गड्ढे से बचाकर निकाला। घर पहुँचकर कपड़े बदले तो लगा कि अचानक हुई बारिश ने साधारण दिन को यादगार बना दिया।

चरण 4: निष्कर्ष इस रचना में घटना का क्रम, परिवेश और उससे उत्पन्न अनुभूति एक साथ उभरते हैं। शीर्षक के अनुरूप आरंभ और स्वाभाविक समापन विषय को पूर्णता देते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले चार संकेत लिख लें: दृश्य, घटना, प्रतिक्रिया और अंतिम अनुभूति। फिर इन्हीं को जोड़कर लगभग 120 शब्दों का सुसंगत लेख बनाएँ।

7(ग). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :
वृक्षारोपण का एक दिन [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में किसी घटना को अपने अनुभव, कल्पना और संवेदना से जीवंत बनाया जाता है। वृक्षारोपण के प्रसंग में केवल पौधा लगाने की विधि बताने के स्थान पर उस दिन के वातावरण और उससे उत्पन्न भाव को केंद्र में रखना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में आरंभ, घटना का विकास और सार्थक समापन होना चाहिए। दृश्य, स्पर्श और गंध जैसे अनुभव लेख को रोचक बनाते हैं। शीर्षक विषयानुकूल तथा भाषा सहज होनी चाहिए।

चरण 1: लेख का रूप और सामग्री तय करना शीर्षक के बाद प्रथम पुरुष में एक दिन का अनुभव प्रस्तुत करेंगे। आरंभ में वर्षा के बाद का वातावरण, मध्य में साथियों के साथ पौधारोपण और अंत में पौधों की देखभाल का संकल्प आएगा। इससे लेख में घटनाक्रम भी बनेगा और प्रकृति से जुड़ाव भी दिखाई देगा। वृक्षों के लाभों की सूची देने के बजाय उन्हें अनुभव के भीतर पिरोना अधिक प्रभावी होगा।

चरण 2: अनुभव को भावपूर्ण क्रम देना गीली मिट्टी की गंध और हथेलियों पर लगी मिट्टी जैसे बिंब अनुभव को प्रत्यक्ष बनाएँगे। माली की छोटी सीख लेख में मोड़ लाएगी और यह स्पष्ट करेगी कि वृक्षारोपण केवल एक दिन का उत्सव नहीं, निरंतर जिम्मेदारी है। लेख का अंतिम भाव उसी पौधे से जुड़े भविष्य की आशा पर केंद्रित रहेगा।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **वृक्षारोपण का एक दिन**

सुबह की हल्की बारिश ने विद्यालय के मैदान को महका दिया था। हम सब हाथों में छोटे पौधे लिए पहुँचे। आज किताबों से बाहर निकलकर धरती से दोस्ती करनी थी। मैंने अपने मित्र के साथ नीम का पौधा लगाया। गीली मिट्टी हथेलियों से चिपकी तो लगा, प्रकृति ने हमारा हाथ थाम लिया है। माली काका ने समझाया कि पौधा लगाना आसान है, उसे बचाना असली जिम्मेदारी है। हमने पानी देने की बारी बाँट ली। लौटते समय मैं बार-बार पीछे देख रहा था। नन्ही पत्तियाँ हवा में ऐसे हिल रही थीं, मानो धन्यवाद कह रही हों। उस दिन समझ आया कि हरियाली भाषणों से नहीं, छोटे प्रयासों से बढ़ती है। अब उस नीम के साथ हमारा संकल्प भी बड़ा होगा और एक दिन उसकी छाँव राहगीरों को सुकून देगी।

चरण 4: निष्कर्ष लेख में वृक्षारोपण के एक दिन का क्रमबद्ध अनुभव, प्रकृति के प्रति आत्मीयता और पौधे की नियमित देखभाल का संकल्प प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: किसी एक छोटे अनुभव को चुनें और अंत में उससे उपजी अनुभूति लिखें; केवल पर्यावरण के लाभ गिनाने से रचनात्मक लेख का प्रभाव घटता है।

8(i)(a). कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय पात्रों के मनोभावों को, द्वंद्वों को किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक पात्रों के मन का वर्णन कर सकता है, जबकि नाटक में मनोभावों को मंच पर दिखने और सुनाई देने योग्य रूप देना होता है।

- संवाद, स्वगत कथन, अभिनय तथा रंगनिर्देश पात्र की मानसिक स्थिति और उसके भीतर चल रहे संघर्ष को व्यक्त करने के प्रमुख साधन हैं।

चरण 1: मनोभावों को दृश्य और श्रव्य बनाना पात्रों के मनोभाव उनके संवादों, स्वर के उतार-चढ़ाव, चेहरे के भाव, हावभाव और शारीरिक मुद्राओं से प्रकट किए जा सकते हैं। मौन, ठहराव या किसी क्रिया का अधूरा रह जाना भी भय, संकोच अथवा असमंजस दिखा सकता है। रंगनिर्देश इन प्रतिक्रियाओं को स्पष्ट करते हैं।

चरण 2: द्वंद्व को मंच पर प्रस्तुत करना पात्र का आंतरिक द्वंद्व स्वगत कथन द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। दूसरे पात्र से संवाद या टकराव भी उसकी परस्पर विरोधी इच्छाएँ उजागर करता है। जैसे, सत्य बोलने और दंड से बचने के बीच उलझा पात्र रुक-रुककर बोले तथा स्वयं से प्रश्न करे। इस प्रकार कहानी का मानसिक वर्णन नाटकीय क्रिया में बदल जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पात्रों के मनोभाव और द्वंद्व संवाद, स्वगत कथन, मुख-मुद्राओं, स्वर, हावभाव और उपयुक्त रंगनिर्देशों के माध्यम से प्रस्तुत किए जाते हैं।

त्वरित सुझाव: नाट्य रूपांतरण के उत्तर में बताइए कि मन की बात दर्शकों तक कैसे पहुँचेगी; केवल संवाद लिखने का उल्लेख पर्याप्त नहीं है।

अथवा

8(i)(b). 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' पाठ के आधार पर रावण और कुंभकरण के बीच हुए संवाद को दृश्य के रूप में प्रस्तुत कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्य रूपांतरण में पाठ के घटनाक्रम और पात्रों के स्वभाव को बनाए रखते हुए संवाद तथा संक्षिप्त रंगनिर्देश लिखे जाते हैं।
- इस प्रसंग में रावण युद्ध के विनाश से व्याकुल है। कुंभकरण सीता-हरण को अनुचित मानता है और रावण के अहंकार पर प्रहार करता है।

चरण 1: दृश्य की रूपरेखा स्थान लंका का राजमहल है। कुंभकरण नींद से जगाया गया है। रावण की व्याकुलता और कुंभकरण की स्पष्टवादिता को संवादों में प्रमुख रखेंगे। मंचनिर्देशों में प्रवेश और भाव-भंगिमा का संकेत देंगे। प्रस्तुत संवाद पाठ के प्रसंग का नाट्य रूपांतरण हैं।

चरण 2: रावण और कुंभकरण का संवाद **दृश्य : लंका का राजमहल**

(कुंभकरण जागकर उठता है। रावण व्याकुल होकर उसके पास आता है।)

कुंभकरण : भाई, तुम्हारा मुख इतना उदास क्यों है?

रावण : राम से युद्ध में हमारे अनेक वीर मारे गए। लंका संकट में है। इसी कारण तुम्हें जगाया है।

कुंभकरण : तुम जगज्जननी सीता को हर लाए और अब कल्याण चाहते हो! यह कैसा विचार है?

(रावण मौन खड़ा रहता है।)

कुंभकरण : अभी भी अभिमान छोड़कर राम का भजन करो। जिनके सेवक हनुमान इतने बलवान हैं, वे साधारण मनुष्य कैसे हो सकते हैं?

(कुंभकरण की वाणी में गंभीरता है। रावण चिंतित दिखाई देता है।)

चरण 3: निष्कर्ष इस दृश्य में रावण की व्याकुलता तथा कुंभकरण द्वारा सीता-हरण की निंदा और राम की महिमा स्वीकार करना संवादों एवं रंगनिर्देशों से व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: दृश्य रूपांतरण में पात्रों के नाम के बाद संवाद लिखें और कोष्ठकों में आवश्यक अभिनय-संकेत दें; मूल प्रसंग से बाहर घटना न जोड़ें।

8(ii)(a). रेडियो नाटक की तुलना में सिनेमा और रंगमंच की लोकप्रियता का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; सिनेमा और रंगमंच में दृश्य तथा ध्वनि दोनों के सहारे कथा प्रस्तुत होती है।
- माध्यमों की लोकप्रियता की तुलना में दर्शक को मिलने वाला अनुभव और उसके लिए आवश्यक कल्पना प्रमुख आधार हैं।

चरण 1: माध्यमों के अंतर को समझें रेडियो नाटक में पात्रों, परिवेश तथा घटनाओं की जानकारी संवाद, संगीत और ध्वनि प्रभावों से मिलती है। श्रोता इन्हें सुनकर अपने मन में दृश्य रचता है। इसलिए रेडियो नाटक का प्रभाव आवाज और श्रोता की कल्पनाशक्ति पर अधिक निर्भर रहता है।

चरण 2: लोकप्रियता का कारण स्पष्ट करें सिनेमा और रंगमंच में दर्शक पात्रों के हावभाव, वेशभूषा, गतिविधियाँ और दृश्यबंध प्रत्यक्ष देखता है तथा संवाद सुनता है। दृश्य और श्रव्य प्रभाव मिलकर कथा को अधिक आकर्षक और सहज बोधगम्य बनाते हैं। रंगमंच पर जीवंत अभिनय तथा सिनेमा में दृश्य परिवर्तन और तकनीकी प्रभाव भी आकर्षण बढ़ाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सिनेमा और रंगमंच दृश्य-श्रव्य माध्यम हैं। इनमें अभिनय, हावभाव, वेशभूषा और दृश्य सज्जा कथा को प्रत्यक्ष तथा आकर्षक बनाते हैं, जबकि रेडियो नाटक में श्रोता को केवल ध्वनियों के आधार पर दृश्य की कल्पना करनी पड़ती है। इस प्रत्यक्ष अनुभव के कारण सिनेमा और रंगमंच अधिक लोकप्रिय हैं।

त्वरित सुझाव: तुलना में पहले श्रव्य और दृश्य-श्रव्य का अंतर लिखें, फिर उसके दर्शक पर प्रभाव को कारण बनाएँ।

अथवा

8(ii)(b). अप्रत्याशित लेखन में किन बातों का ध्यान रखा जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पूर्वनिर्धारित तैयारी की अपेक्षा मौलिक चिंतन, अनुभव और कल्पना की माँग करता है।
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ विषय की एकसूत्रता और भाषा की सहजता बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 1: विषय समझकर विचार जुटाएँ शीर्षक को ध्यान से पढ़कर उसका आशय समझना चाहिए। उससे जुड़े अपने अनुभव, स्मृतियाँ, कल्पनाएँ और विचार संक्षेप में जुटाकर उनकी रूपरेखा बनानी चाहिए। विषय अपरिचित लगे तो घबराने के स्थान पर जीवन के परिचित प्रसंगों से उसका संबंध खोजना उपयोगी होता है।

चरण 2: विचारों को मौलिक और व्यवस्थित रूप दें लेखन विषय से जुड़ा, मौलिक और रोचक हो। विचारों में क्रम तथा अनुच्छेदों में संबंध रहे। सरल, प्रभावी और शुद्ध भाषा अपनाएँ। अनावश्यक विस्तार, दोहराव और रटी हुई सामग्री से बचें। आरंभ आकर्षक हो तथा अंत पूरे विचार को सार्थक रूप से पूर्ण करे।

चरण 3: निष्कर्ष अप्रत्याशित लेखन में विषय का आशय समझकर अनुभव, कल्पना और मौलिक चिंतन का उपयोग करना चाहिए। विचारों की रूपरेखा बनाकर उन्हें क्रमबद्ध तथा विषयानुकूल रखें। भाषा सहज, स्पष्ट और रोचक हो; अनावश्यक विस्तार तथा दोहराव से बचें। लेखन में तारतम्य और प्रभावी आरंभ-अंत का ध्यान रखें।

त्वरित सुझाव: अपरिचित विषय पर तुरंत लिखने से पहले उससे जुड़े अपने तीन अनुभव या विचार लिखकर क्रम तय करें।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
संपादकीय लेखन की विशेषताएँ लिखते हुए यह भी स्पष्ट कीजिए कि समाचार-पत्रों में यह किसका दायित्व होता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र की वैचारिक नीति और दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।
- संपादकीय में तथ्य, विश्लेषण और तर्क का संतुलन होता है; सामान्यत: लेखक का व्यक्तिगत नाम नहीं छपता।

चरण 1: विशेषताओं के लिए सामग्री चुनें प्रश्न के पहले भाग में केवल संपादकीय की परिभाषा पर्याप्त नहीं है। इसमें विषय की समसामयिकता, तथ्यों की विश्वसनीयता, तर्कपूर्ण विश्लेषण तथा निष्कर्ष का उल्लेख करना चाहिए। संपादकीय समाचार की सूचना मात्र नहीं देता, बल्कि उसके महत्त्व और प्रभाव पर समाचार-पत्र का विचार भी स्पष्ट करता है।

चरण 2: दायित्व का सही निर्धारण करें संपादकीय लेखन का दायित्व संपादक तथा संपादकीय मंडल का होता है। संपादक की ओर से सहायक संपादक या संपादकीय मंडल का सदस्य इसे लिख सकता है। इसके विचार पूरे समाचार-पत्र के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं; इसलिए सामान्यत: इसमें व्यक्तिगत लेखक का नाम नहीं दिया जाता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर संपादकीय समाचार-पत्र की वैचारिक नीति का प्रतिनिधि लेख है। इसमें महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय का तथ्यपूर्ण, तर्कसंगत तथा संतुलित विश्लेषण और स्पष्ट निष्कर्ष होता है। भाषा गंभीर, संयत और प्रभावशाली होती है। यह सामान्यत: बिना लेखक के नाम के प्रकाशित होता है। इसके लेखन का दायित्व संपादक और संपादकीय मंडल का होता है; आवश्यकता पर सहायक संपादक भी इसे लिखता है।

चरण 4: निष्कर्ष संपादकीय की पहचान समाचार-पत्र का दृष्टिकोण, प्रमाणपूर्ण विश्लेषण और स्पष्ट निष्कर्ष है; इसके लेखन का उत्तरदायित्व संपादक तथा संपादकीय मंडल निभाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में सोचें: संपादकीय की विशेषताएँ और उसे लिखने वाले संपादकीय मंडल का दायित्व।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
पत्रकारीय लेखन क्या है ? इसके लेखक को सदैव सहज, सरल और रोचक भाषा का प्रयोग क्यों करना चाहिए ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, विचार तथा सूचनाएँ लिखना पत्रकारीय लेखन है।
- इसके पाठक भिन्न शिक्षा, रुचि और सामाजिक पृष्ठभूमि वाले लोग होते हैं; भाषा सबके लिए बोधगम्य होनी चाहिए।

चरण 1: पत्रकारीय लेखन का अर्थ स्पष्ट करें समाचार-पत्र, पत्रिका तथा अन्य जनसंचार माध्यमों में प्रकाशित या प्रसारित होने वाले समाचार, रिपोर्ट, लेख आदि का लेखन पत्रकारीय लेखन कहलाता है। इसमें तथ्य और विचार व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाए जाते हैं। प्रश्न में इसी लेखन की परिभाषा और भाषा की विशेषताओं का कारण पूछा गया है।

चरण 2: भाषा को पाठक की आवश्यकता से जोड़ें विविध पाठकों तक संदेश पहुँचाने के लिए कठिन शब्दों और उलझे वाक्यों से बचना आवश्यक है। सहज और सरल भाषा में पाठक अर्थ जल्दी समझता है तथा भ्रम कम होता है। रोचक शैली उसका ध्यान और रुचि बनाए रखती है। अत: सरलता सूचना की स्पष्टता से और रोचकता पाठक को जोड़े रखने से संबंधित है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में आदर्श उत्तर जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, लेख आदि लिखना पत्रकारीय लेखन है। इसका उद्देश्य विविध शिक्षा, रुचि और पृष्ठभूमि वाले लोगों तक तथ्य तथा विचार पहुँचाना है। इसलिए लेखक को सहज और सरल भाषा अपनानी चाहिए, जिससे पाठक संदेश तुरंत समझ सकें। रोचक प्रस्तुति उनकी रुचि बनाए रखती है और सामग्री पढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन की भाषा व्यापक पाठक समुदाय के अनुकूल होनी चाहिए। सहजता और सरलता अर्थ स्पष्ट करती हैं तथा रोचकता पाठक का ध्यान बनाए रखती है।

त्वरित सुझाव: क्यों पूछा जाए तो केवल भाषा की विशेषताएँ न गिनाएँ; हर विशेषता को पाठक की समझ या रुचि से जोड़ें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

फ़ीचर लेखन के स्वरूप पर विचार व्यक्त कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी विषय, घटना, स्थान या व्यक्ति का तथ्यपूर्ण, रोचक और मानवीय संवेदना से युक्त प्रस्तुतीकरण है।
- इसमें समाचार की तरह केवल तत्काल घटना बताना पर्याप्त नहीं; परिवेश, अनुभव और विवरण से विषय को जीवंत बनाया जाता है।

चरण 1: स्वरूप के प्रमुख पक्ष उत्तर में तथ्य, रोचक प्रस्तुति, मानवीय दृष्टि और भाषा की सजीवता को जोड़ना चाहिए। फ़ीचर का उद्देश्य पाठक को जानकारी देने के साथ विषय से भावनात्मक रूप से जोड़ना भी है। इसलिए दृश्यात्मक वर्णन और अनुभवों को स्थान मिलता है।

चरण 2: अर्थ का विस्तार फ़ीचर में लेखक विषय को किसी विशेष कोण से देखता है और संबंधित विवरणों का चयन करता है। उदाहरण, प्रसंग तथा पात्रों की अनुभूतियाँ पाठक की रुचि बनाए रखती हैं। फिर भी इसकी बुनियाद वास्तविक सूचना होती है, इसलिए इसे मनमानी काल्पनिक कहानी नहीं माना जा सकता। आरंभ से अंत तक विषयगत एकता बनी रहनी चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर फ़ीचर तथ्याधारित, रोचक और संवेदनापूर्ण लेखन है। इसमें किसी व्यक्ति, स्थान, घटना या सामाजिक विषय को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है। आकर्षक शीर्षक, कौतूहल जगाने वाला आरंभ, सजीव वर्णन और प्रभावशाली समापन इसकी विशेषताएँ हैं। इसकी भाषा सरल, चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण होती है। कल्पनाशील प्रस्तुति के बावजूद तथ्यों की प्रामाणिकता आवश्यक है। इसका स्वरूप सामान्य समाचार से अधिक लचीला होता है।

चरण 4: निष्कर्ष फ़ीचर में प्रामाणिक तथ्यों का सजीव, रोचक और मानवीय प्रस्तुतीकरण होता है।

त्वरित सुझाव: स्वरूप बताते समय तथ्य, मानवीय पक्ष, चित्रात्मक भाषा और आकर्षक प्रस्तुति अवश्य जोड़ें।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

दुर्बल से दुर्बल व्यक्ति भी अपने दुख को सबके सामने दिखाना उचित नहीं समझता। 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता पीड़ा को मनोरंजन बनाते संचार माध्यमों की संवेदनहीनता पर व्यंग्य करती है।
- शारीरिक दुर्बलता व्यक्ति की गरिमा और निजी अनुभूतियों के सम्मान के अधिकार को समाप्त नहीं करती।

चरण 1: काव्य-प्रसंग का आशय कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति से उसकी असमर्थता और दुख के बारे में बार-बार प्रश्न करता है। उसका उद्देश्य व्यक्ति को सहज बनाना नहीं, उसकी पीड़ा को कैमरे के लिए उभारना है। किसी का दुख इस तरह सबके सामने दिखाने की इच्छा संवेदनशील सहायता से भिन्न है।

चरण 2: अर्थ का विस्तार कवि की आलोचना का लक्ष्य पीड़ित व्यक्ति नहीं, उसके प्रति अपनाया गया अमानवीय व्यवहार है। कैमरा उसके चेहरे पर केंद्रित करके करुणा का दृश्य जुटाना चाहता है। दुख के प्रश्नों को बार-बार दोहराना व्यक्ति की अनुभूति का सम्मान नहीं करता। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि सहायता और सहानुभूति में पीड़ित की इच्छा तथा निजता का ध्यान आवश्यक है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर हर व्यक्ति में आत्मसम्मान होता है; इसलिए दुर्बल व्यक्ति भी अपने दुख का सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं चाहता। कविता में संचालक अपाहिज से पीड़ा उगलवाकर उसे और दर्शकों को रुलाना चाहता है। वह उसके निजी दुख को कार्यक्रम की सामग्री बना देता है। अपाहिज की असहजता बताती है कि करुणा के नाम पर किसी की विवशता उघाड़ना उसकी गरिमा को चोट पहुँचाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता पीड़ित की गरिमा का सम्मान करने और उसके दुख का तमाशा बनाने से बचने का संदेश देती है।

त्वरित सुझाव: अपाहिज की निजी पीड़ा और संचालक की प्रदर्शनकारी संवेदना के बीच संबंध स्पष्ट करें।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : तुलसीदास ने अपने युग की जिस दुर्दशा का चित्रण 'कवितावली' अंश में किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास तत्कालीन समाज में आजीविका के संकट और भूख से उत्पन्न विवशता का चित्रण करते हैं।
- किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक का उल्लेख संकट की व्यापकता दिखाता है।

चरण 1: दुर्दशा के प्रमाण पहचानें कवि के अनुसार किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी नहीं मिल रही है। इस प्रकार अलग-अलग व्यवसायों के लोग जीविका से वंचित हैं। पेट की आग मनुष्य से अनुचित कार्य भी करवा सकती है; इसलिए इसे केवल किसी एक वर्ग की कठिनाई न बताएँ।

चरण 2: अर्थ का विस्तार कवि का चित्रण केवल साधनों की कमी तक सीमित नहीं रहता। वह बताता है कि जीविका छिनने से समाज में असहायता और दिशा का अभाव फैल जाता है। पेट भरने की चिंता मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित करने लगती है। संतान बेचने का उल्लेख इस दारुण स्थिति की चरम सीमा है। इसलिए उत्तर में आर्थिक अभाव और उसके मानवीय परिणाम दोनों समझाने चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास के युग में गरीबी, बेरोज़गारी और भूख का भीषण संकट था। किसान खेती से, व्यापारी व्यापार से और सेवक नौकरी से वंचित थे; भिखारी को भी भीख नहीं मिलती थी। जीविका के अभाव में लोग चिंतित होकर पूछते थे कि कहाँ जाएँ और क्या करें। पेट की आग बुझाने के लिए लोग ऊँच-नीच कर्म करने तथा अपनी संतान तक बेचने को विवश थे।

चरण 4: निष्कर्ष कवितावली तत्कालीन आर्थिक संकट, भूख और आजीविका से वंचित जनसामान्य की विवशता का चित्र प्रस्तुत करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में चारों व्यवसायों की दुर्दशा के साथ भूख से उत्पन्न नैतिक और सामाजिक विवशता जोड़ें।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : 'उषा' कविता के आधार पर सूर्योदय के साथ टूटने वाले जादू को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषाकाल के बदलते रंगों को घरेलू और दृश्यात्मक बिंबों से साकार करती है।
- सूर्योदय से पहले का सम्मोहक वातावरण प्रकाश बढ़ने पर बदल जाता है; इसी परिवर्तन को जादू का टूटना कहा गया है।

चरण 1: जादू का संदर्भ समझें प्रातःकालीन आकाश कभी नीले शंख, कभी राख से लीपे चौके और कभी लाल केसर से धुली सिल जैसा दिखाई देता है। नील जल में झिलमिलाती गौर देह का बिंब भी इसी रंगमय सौंदर्य को मूर्त करता है। ये तुलनाएँ उषा के क्षण-क्षण बदलते रूप को अनुभवगम्य बनाती हैं।

चरण 2: अर्थ का विस्तार यहाँ जादू प्रकृति की सुंदरता से उत्पन्न विस्मय का सूचक है। मंद प्रकाश में आकाश के अनेक रूप दिखाई देते हैं, इसलिए दृश्य में कोमलता और रहस्य रहता है। सूर्य का स्पष्ट प्रकाश उस वातावरण को साधारण दिन में बदल देता है। कविता का अंतिम परिवर्तन पहले के सभी बिंबों को जोड़कर समझना चाहिए; जादू किसी वास्तविक चमत्कार का वर्णन नहीं है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर उषाकाल में आकाश के बदलते रंग एक सम्मोहक जादू रचते हैं। नीले शंख, राख से लीपे चौके, केसर से धुली सिल और नील जल में झिलमिलाती गौर देह के बिंब इस अद्भुत सौंदर्य को उभारते हैं। सूर्य निकलते ही प्रकाश फैल जाता है और रंगों का रहस्यमय खेल समाप्त हो जाता है। इसी मोहक उषाकालीन दृश्य के विलीन होने को कवि जादू टूटना कहता है।

चरण 4: निष्कर्ष सूर्योदय के साथ उषा की रहस्यमयी रंग-छटाएँ समाप्त होना ही कविता में जादू का टूटना है।

त्वरित सुझाव: जादू को किसी अलौकिक घटना से न जोड़ें; उसे उषा के बदलते रंगों और सूर्योदय से स्पष्ट करें।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'कवितावली' के छंद के आधार पर लिखिए कि पेट की आग से क्या तात्पर्य है। उसकी तुलना 'बड़वाग्नि' से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेट की आग भूख से उत्पन्न तीव्र पीड़ा और आजीविका की अनिवार्य आवश्यकता का प्रतीक है।
- बड़वाग्नि समुद्र में स्थित प्रचंड अग्नि है; तुलना में भूख की उससे भी अधिक विनाशकारी शक्ति व्यक्त होती है।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ समझिए तुलसीदास भूख को ऐसी आग कहते हैं जो व्यक्ति को निरंतर बेचैन रखती है। किसान, मजदूर, व्यापारी, कलाकार और भिखारी सभी पेट भरने के लिए परिश्रम करते हैं। भूख का प्रश्न केवल शारीरिक कष्ट नहीं, बल्कि मनुष्य की जीविका और सामाजिक विवशता का प्रश्न है।

चरण 2: तुलना का आशय स्पष्ट कीजिए कवि कहते हैं कि पेट की आग बड़वाग्नि से भी बड़ी है। समुद्र की प्रचंड आग भी भूख की व्यापकता के सामने छोटी पड़ती है। भूख मनुष्य से उचित-अनुचित अनेक कर्म करा सकती है; इसीलिए इस तुलना में उसकी असहनीयता और विकरालता उभरती है।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर पेट की आग का तात्पर्य भूख की असहनीय पीड़ा से है, जो मनुष्य को आजीविका के लिए अनेक कर्म करने को विवश करती है। इसकी तुलना बड़वाग्नि से करके कवि ने बताया है कि भूख की ज्वाला उससे भी अधिक प्रचंड और विनाशकारी है।

चरण 4: निष्कर्ष अत: पेट की आग भूख की पीड़ा है; बड़वाग्नि से तुलना उसकी असाधारण प्रचंडता व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले भूख का अर्थ और फिर बड़वाग्नि से तुलना का कारण अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता से उद्धृत पंक्ति "हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे" में कैसा भाव निहित है ? इस कथन से मीडियाकर्मियों के विषय में क्या पता चलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में संवेदनहीन मीडिया द्वारा पीड़ा को प्रदर्शन और मनोरंजन में बदलने पर व्यंग्य है।
- प्रश्नकर्ता की सफलता अपाहिज व्यक्ति की सहायता से नहीं, उसे कैमरे के सामने रुलाने से मापी जा रही है।

चरण 1: पंक्ति में निहित भाव पहचानिए बार-बार प्रश्न करके किसी पीड़ित को रुलाने का संकल्प सहानुभूति नहीं, उसकी भावनाओं पर दबाव डालने की प्रवृत्ति है। वक्ता को उसकी असुविधा की चिंता नहीं है। वह ऐसा दृश्य चाहता है जिससे कार्यक्रम प्रभावशाली बने और दर्शकों पर भावनात्मक असर पड़े।

चरण 2: मीडियाकर्मियों की मानसिकता स्पष्ट कीजिए इस कथन में कवि मीडियाकर्मियों की संवेदनहीनता और व्यावसायिक स्वार्थ पर व्यंग्य करते हैं। वे अपाहिज व्यक्ति को सम्मान देने के स्थान पर उसकी पीड़ा का इस्तेमाल करते हैं। रुलाने की योजना बताती है कि उनकी करुणा बनावटी और कार्यक्रम की सफलता तक सीमित है।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर इस पंक्ति में पीड़ित की भावनाओं के प्रति क्रूरता और संवेदनहीनता का भाव है। मीडियाकर्मी बार-बार प्रश्न करके अपाहिज व्यक्ति को रुलाना चाहते हैं, ताकि कार्यक्रम प्रभावशाली बने। इससे उनकी दिखावटी सहानुभूति, व्यावसायिक स्वार्थ तथा मानवीय पीड़ा को तमाशा बनाने की प्रवृत्ति प्रकट होती है।

चरण 4: निष्कर्ष अत: कथन मीडियाकर्मियों की संवेदनहीन और प्रदर्शनप्रिय मानसिकता पर व्यंग्य करता है।

त्वरित सुझाव: रुलाने को करुणा न मानें; उत्तर में पीड़ा के प्रदर्शन और मीडियाकर्मियों के स्वार्थ को जोड़िए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया' –
'बादल राग' कविता की इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल परिवर्तन और क्रांति के प्रतीक हैं; प्राकृतिक दृश्य सामाजिक अर्थ भी ग्रहण करता है।
- क्षणिक सुख के ऊपर दुख की छाया का बिंब जीवन की अस्थिरता और वंचितों की व्यथा का संकेत देता है।

चरण 1: प्राकृतिक बिंब समझिए वायु के विस्तृत सागर पर बादल की छाया तैरती हुई दिखाई देती है। कवि इस दृश्य को जीवन के अनुभव से जोड़ते हैं। जिस प्रकार बादल की छाया चलायमान रहती है, उसी प्रकार सुख भी स्थायी नहीं रहता; उसके ऊपर दुख की आशंका छाई रहती है।

चरण 2: जीवन और समाज से संबंध जोड़िए कविता का भाव केवल मौसम का वर्णन नहीं है। संसार में सुख क्षणिक और अस्थिर है, जबकि दुख का प्रभाव गहरा है। शोषित और पीड़ित लोगों के जीवन में यह अनुभव विशेष रूप से दिखाई देता है। बादल की उपस्थिति उनके दुख और परिवर्तन की संभावना की पृष्ठभूमि रचती है।

चरण 3: संक्षिप्त उत्तर वायु रूपी सागर पर तैरते बादल की छाया कवि को जीवन के क्षणिक सुख पर छाए दुख जैसी लगती है। संसार का सुख अस्थायी है और दुख की आशंका उसे घेरे रहती है। यह बिंब जीवन की अनिश्चितता तथा पीड़ित मानव की व्यथा व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष अत: बादल की चलती छाया के माध्यम से क्षणिक सुख और उस पर छाए दुख का भाव व्यक्त हुआ है।

त्वरित सुझाव: पहले समीर-सागर का दृश्य समझिए, फिर उसे जीवन के अस्थिर सुख और दुख से जोड़कर लिखिए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
भक्तिन का अतीत, परिवार और समाज की समस्याओं से जूझते हुए, आगे बढ़ता है, कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन का चरित्र विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष, परिश्रम, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता को प्रकट करता है।
- पाठ में स्त्री के प्रति पारिवारिक भेदभाव, संपत्ति की लालसा और पंचायत के अन्याय की ठोस घटनाएँ मिलती हैं।

चरण 1: पारिवारिक कठिनाइयों की पहचान कीजिए भक्तिन का मूल नाम लछमिन था। कम उम्र में विवाह के बाद ससुराल में बेटियाँ जन्म देने के कारण उसे उपेक्षा मिली। उसने पति के साथ अलग गृहस्थी बसाकर कठोर परिश्रम से खेती और घर सँभाला। पति की मृत्यु के बाद संपत्ति पर संबंधियों की दृष्टि पड़ी, पर उसने दूसरा विवाह करके आश्रित बनना स्वीकार नहीं किया।

चरण 2: सामाजिक अन्याय के बीच संघर्ष बताइए बड़ी बेटी के विधवा होने पर भी परिवार का संकट समाप्त नहीं हुआ। संबंधियों के षड्यंत्र और पंचायत के अन्यायपूर्ण निर्णय ने बेटी का जीवन प्रभावित किया। इन घटनाओं में स्त्री की इच्छा की उपेक्षा और पुरुषप्रधान समाज का दबाव दिखाई देता है। भक्तिन इन परिस्थितियों में भी परिवार का दायित्व निभाती रही।

चरण 3: आत्मनिर्भरता की दिशा स्पष्ट कीजिए लगान न चुका पाने पर जमींदार के अपमान ने उसे गाँव छोड़ने के लिए प्रेरित किया। शहर में महादेवी वर्मा के यहाँ काम करके उसने जीविका का नया मार्ग बनाया। सेवा में निष्ठा के साथ उसका स्वाभिमान भी बना रहा। उसका आगे बढ़ना सुख-सुविधा की यात्रा नहीं, कठिनाइयों के बीच काम और आत्मसम्मान बचाए रखने की यात्रा है।

चरण 4: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भक्तिन का जीवन निरंतर संघर्ष की कहानी है। ससुराल में बेटियाँ होने के कारण उपेक्षा सहकर उसने पति के साथ अलग गृहस्थी सँभाली। पति की मृत्यु पर संबंधियों की संपत्ति-लोलुपता, विधवा बेटी के प्रति पंचायत का अन्याय और लगान के लिए जमींदार का अपमान झेला। फिर भी परिश्रम और स्वाभिमान नहीं छोड़ा। शहर में महादेवी के यहाँ सेवा करके वह

आत्मनिर्भर बनी।

चरण 5: निष्कर्ष अतः परिवार और समाज की बाधाओं के बीच भक्तिन परिश्रम, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता के सहारे आगे बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: जीवन की कठिनाइयाँ गिनाने के साथ हर प्रमुख मोड़ पर भक्तिन के संघर्ष और स्वाभिमान को भी दिखाइए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : आदर्श समाज की स्थापना में डॉ. आंबेडकर के विचारों की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित है।
- सामाजिक गतिशीलता और सबके लिए समान अवसर आदर्श समाज की आवश्यक शर्तें हैं।

चरण 1: विचारों का आधार आंबेडकर जन्म से निर्धारित ऊँच-नीच और पेशे के बंधन का विरोध करते हैं। उनके अनुसार समाज में परिवर्तन की गुंजाइश होनी चाहिए और उसका लाभ सभी वर्गों को मिलना चाहिए। व्यक्ति की योग्यता तथा रुचि को विकसित होने का अवसर मिलना सामाजिक न्याय की शर्त है।

चरण 2: उत्तर के लिए आवश्यक संबंध सार्थकता का अर्थ केवल आदर्शों के नाम गिनाना नहीं है। यह भी बताना आवश्यक है कि ये आदर्श सामाजिक व्यवहार को कैसे बदलते हैं। समता भेदभाव दूर करती है, स्वतंत्रता व्यक्ति को अपना काम चुनने देती है और भ्रातृत्व वर्गों को एक-दूसरे के सुख-दुख से जोड़ता है। इस मेल से लोकतांत्रिक समाज में सभी की भागीदारी संभव होती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर डॉ. आंबेडकर स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित समाज चाहते हैं। उनके विचार जातिगत ऊँच-नीच तथा जन्माधारित व्यवसाय के बंधन मिटाकर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता विकसित करने का अवसर देते हैं। समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संपर्क, सहभागिता और परस्पर सम्मान बढ़ने से लोकतंत्र जीवन-पद्धति बनता है। इसलिए उनके विचार न्यायपूर्ण, गतिशील और आदर्श समाज की स्थापना में सार्थक हैं।

चरण 4: निष्कर्ष आदर्श समाज के लिए समान अवसरों के साथ सामाजिक मेलजोल और व्यक्ति की स्वतंत्रता आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व को जातिगत भेदभाव के उन्मूलन से जोड़ें।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : 'काले मेघा पानी दे' पाठ में लेखक मेंढक मंडली पर पानी डालना व्यर्थ क्यों मानते थे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक की किशोरावस्था की सोच तर्कप्रधान थी; वे वर्षा के लिए पानी बहाने को अंधविश्वास मानते थे।
- इस प्रश्न का केंद्र लेखक की आपत्ति है, जीजी की आस्था का समर्थन नहीं।

चरण 1: लेखक की आपत्ति समझना सूखे के दिनों में पानी का अभाव था। ऐसे समय इंदर सेना या मेंढक मंडली पर घरों में बचाया हुआ पानी उड़ेलना लेखक को खटकता था। वे पानी बहाने और वर्षा होने के बीच कोई तर्कसंगत संबंध नहीं देखते थे। इसलिए उन्हें यह आयोजन पानी की बर्बादी लगता था।

चरण 2: उत्तर के लिए आवश्यक संबंध उत्तर में लेखक की उस समय की दृष्टि का ध्यान रखना चाहिए। पानी का अभाव उनके लिए प्रत्यक्ष समस्या थी, जबकि मंडली पर पानी डालकर बादलों से वर्षा माँगने का विश्वास उन्हें आधारहीन लगता था। इसीलिए उनकी आपत्ति उत्सव में शामिल लड़कों के प्रति नहीं, उस रीति में पानी खर्च करने के प्रति थी। यही तर्क और लोकविश्वास का अंतर पाठ के प्रसंग को

स्पष्ट करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक मेंढक मंडली पर पानी डालना व्यर्थ मानते थे, क्योंकि सूखे के समय पीने तक के पानी का संकट था। कठिनाई से जुटाए और बचाए गए पानी को लड़कों पर उड़ेलना उन्हें बर्बादी लगता था। उनकी तर्कशील दृष्टि में इस प्रकार पानी बहाने से वर्षा होने का कोई संबंध नहीं था। इसलिए वे इसे अंधविश्वास मानकर इसका विरोध करते थे।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक की आपत्ति पानी की कमी के बीच उसकी बर्बादी और वर्षा संबंधी अंधविश्वास पर थी।

त्वरित सुझाव: सूखा, पानी का अभाव और वर्षा से तार्किक संबंध का अभाव—इन कारणों को स्पष्ट करें।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के आधार पर श्रम विभाजन और श्रमिक विभाजन में अंतर स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- श्रम-विभाजन कामों का बँटवारा है, जबकि जाति-व्यवस्था श्रमिकों को जन्म के आधार पर बाँटती है।
- अंतर बताते समय योग्यता, जन्म और पेशा बदलने की स्वतंत्रता को आधार बनाएँ।

चरण 1: दोनों का आधार श्रम-विभाजन में समाज की आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग काम किए जाते हैं। इसके विपरीत जातिगत श्रमिक-विभाजन में व्यक्ति का काम उसकी रुचि या दक्षता से तय नहीं होता; जन्म उसे एक विशेष सामाजिक वर्ग और पेशे से बाँध देता है।

चरण 2: उत्तर के लिए आवश्यक संबंध इस व्यवस्था में काम की उपयोगिता से अधिक काम करने वाले की जाति को महत्त्व मिलता है। इसीलिए आंबेडकर इसे स्वाभाविक श्रम-विभाजन नहीं मानते।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर श्रम-विभाजन में कार्यों का बँटवारा योग्यता, रुचि और आवश्यकता के अनुसार होता है। श्रमिक-विभाजन में जाति के आधार पर मनुष्यों को ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बाँटकर जन्म से पेशा निश्चित कर दिया जाता है; पेशा बदलने की स्वतंत्रता बाधित होती है।

चरण 4: निष्कर्ष पहला कामों का उपयोगी बँटवारा है; दूसरा जन्माधारित मानव-विभाजन और सामाजिक भेदभाव है।

त्वरित सुझाव: अंतर को केवल परिभाषा तक सीमित न रखें; जन्म और स्वतंत्रता का भेद भी लिखें।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'काले मेघा पानी दे' पाठ में जीजी किसान के उदाहरण द्वारा क्या सिद्ध करना चाहती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी किसान के बीज बोने का उदाहरण देकर त्याग से अधिक फल मिलने का विश्वास समझाती हैं।
- पाठ में किसान का उदाहरण पानी देने और वर्षा की आशा के बीच समानता स्थापित करता है।

चरण 1: उदाहरण का आशय किसान अपनी उपज का कुछ अंश बीज बनाकर खेत में बिखेरता है। देखने में यह अनाज फेंकना लगता है, पर उसी से फसल पैदा होती है। जीजी इसी बात से समझाती हैं कि कुछ पाने के लिए पहले अपने पास से कुछ देना पड़ता है।

चरण 2: उत्तर के लिए आवश्यक संबंध यह जीजी की आस्थापरक व्याख्या है। उदाहरण का मुख्य भाव दान और त्याग है; किसान का बीज देना तथा लोगों का पानी देना इसी भाव से जोड़े गए हैं।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर जीजी समझाना चाहती हैं कि कुछ पाने के लिए पहले त्याग करना पड़ता है। किसान बीज के रूप

में अनाज धरती को देकर अधिक फसल पाता है। वैसे ही इंदर सेना को थोड़ा पानी देना वर्षा पाने की आशा का प्रतीक है।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी किसान के उदाहरण से पहले देने और फिर अधिक पाने की भावना सिद्ध करती हैं।

त्वरित सुझाव: बीज बोने को अनाज की बर्बादी न कहें; उसका फल और पानी देने का प्रतीक स्पष्ट करें।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : बाज़ार जाते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, जिससे बाज़ार के जादू से बचा जा सके ? 'बाज़ार-दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण मनुष्य की अनिश्चित इच्छाओं को बढ़ाता है; आवश्यकता की स्पष्ट पहचान उससे बचाती है।
- पाठ में मन के खाली होने का अर्थ उद्देश्यहीन खरीदारी है; संतोष और संयम सही उपभोग का आधार हैं।

चरण 1: पाठ का संकेत समझिए लेखक बताते हैं कि बाज़ार की चमक ग्राहक को ऐसी वस्तुएँ खरीदने के लिए लुभाती है जिनकी उसे आवश्यकता नहीं होती। इसलिए केवल धन होना पर्याप्त नहीं; यह समझ भी चाहिए कि क्या खरीदना है और क्यों खरीदना है। भगतजी का सीमित आवश्यकताओं वाला संतुष्ट जीवन बाज़ार के प्रभाव से बचने का उदाहरण है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर बाज़ार जाते समय अपनी वास्तविक आवश्यकताएँ स्पष्ट रखनी चाहिए और केवल उपयोगी वस्तुएँ खरीदनी चाहिए। मन को अनावश्यक इच्छाओं से बचाकर संतोष तथा संयम रखना चाहिए। उद्देश्यहीन घूमने और वस्तुओं की चमक से प्रभावित होने पर बाज़ार का जादू हावी हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्पष्ट आवश्यकता, संतोष और विवेकपूर्ण खरीदारी बाज़ार के जादू से बचाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आवश्यकता की स्पष्टता और इच्छाओं पर नियंत्रण दोनों जोड़िए; केवल कम पैसे ले जाने की बात पर्याप्त नहीं है।

14(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मुख्य समस्या पर विचार कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी का केंद्रीय विषय बदलते जीवन मूल्यों से उत्पन्न पीढ़ियों का अंतराल है।
- यशोधर बाबू की परंपरागत जीवन दृष्टि और उनके परिवार की आधुनिक आकांक्षाओं के बीच असामंजस्य मुख्य समस्या को उभारता है।

चरण 1: मुख्य समस्या पहचानिए यशोधर बाबू सादगी, पुराने आदर्शों और किशनदा की जीवन शैली से जुड़े हैं। उनके बच्चे आधुनिक रहन सहन, उपभोग और उत्सव को महत्त्व देते हैं। अपनी वैवाहिक वर्षगाँठ का आधुनिक आयोजन भी उन्हें सहज नहीं लगता। यह असहजता केवल उत्सव की पसंद का अंतर नहीं, बल्कि परिवार में उनकी बदलती स्थिति और अकेलेपन का संकेत है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कहानी की मुख्य समस्या पुरानी और नई पीढ़ी के जीवन मूल्यों का टकराव है। यशोधर बाबू परंपरा और सादगी से जुड़े हैं, जबकि उनका परिवार आधुनिक रहन सहन अपनाता है। परस्पर समझ की कमी उन्हें अपने ही परिवार में अकेलापन और उपेक्षा अनुभव कराती है।

चरण 3: निष्कर्ष पीढ़ियों का अंतराल और उससे उपजा पारिवारिक अलगाव कहानी की केंद्रीय समस्या है।

त्वरित सुझाव: मुख्य समस्या लिखते समय यशोधर बाबू और उनके बच्चों की जीवन दृष्टियों का अंतर समझाइए; वर्षगाँठ का वर्णन भर न कीजिए।

14(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

'जूझ' कहानी के लेखक का संघर्ष हमारे लिए प्रेरणादायक है, कैसे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव का संघर्ष शिक्षा पाने की तीव्र इच्छा और प्रतिकूल स्थितियों में प्रयास जारी रखने की प्रेरणा देता है।
- पाठ में श्रम, दृढ़ निश्चय और शिक्षक का मार्गदर्शन व्यक्ति के विकास के साधन बनते हैं।

चरण 1: संघर्ष के आधार स्पष्ट कीजिए लेखक को खेती का काम करना पड़ता था और पिता उनकी पढ़ाई के पक्ष में नहीं थे। फिर भी उन्होंने शिक्षा की इच्छा नहीं छोड़ी। काम की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए विद्यालय पहुँचना और पढ़ाई जारी रखना उनके संकल्प को दिखाता है। अध्यापक के प्रोत्साहन से कविता में उनकी रुचि विकसित हुई; साधना ने उनकी रचनात्मक क्षमता को आगे बढ़ाया।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आनंद यादव ने गरीबी, पिता के विरोध और खेती की जिम्मेदारियों के बीच पढ़ाई जारी रखी। शिक्षा के प्रति लगन, परिश्रम तथा शिक्षकों के मार्गदर्शन से उन्होंने अपनी प्रतिभा विकसित की। उनका संघर्ष सिखाता है कि दृढ़ संकल्प से कठिन परिस्थितियों में भी लक्ष्य पाया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक का जीवन शिक्षा के लिए संघर्ष, परिश्रम और निरंतर प्रयास की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: प्रेरणा को किसी घटना से जोड़िए: पिता का विरोध और खेती करते हुए पढ़ना संकल्प का ठोस प्रमाण हैं।

14(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

सिंधु सभ्यता को लघुता में भी महत्ता का अनुभव करने वाली संस्कृति कहे जाने का क्या आधार है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिंधु सभ्यता का सांस्कृतिक वैभव केवल विशाल निर्माणों में नहीं, छोटी कलात्मक वस्तुओं में भी दिखाई देता है।
- सूक्ष्म शिल्प, सौंदर्यबोध और दैनिक जीवन की वस्तुएँ इस संस्कृति की समृद्धि तथा मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देती हैं।

चरण 1: कथन का आधार समझिए लेखक सभ्यता की महत्ता को केवल राजसी शक्ति और भव्य स्मारकों से नहीं आँकते। मोहनजोदड़ो से प्राप्त छोटी मूर्तियाँ, मुहरें, आभूषण और उपयोगी वस्तुएँ भी उच्च कलात्मक समझ दिखाती हैं। छोटे आकार में रूप, बारीकी और उपयोगिता का सुंदर मेल मिलता है। इसलिए सामान्य जीवन की वस्तुएँ भी उस समाज के विकसित सौंदर्यबोध का प्रमाण बन जाती हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर सिंधु सभ्यता की छोटी मूर्तियों, मुहरों, आभूषणों तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं में उत्कृष्ट शिल्प और सौंदर्यबोध मिलता है। वहाँ की नर्तकी की छोटी प्रतिमा भी प्रभावशाली है। साधारण और छोटे आकार की वस्तुओं में कलात्मक गरिमा देखना ही लघुता में महत्ता अनुभव करना है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटी कलाकृतियों और सामान्य उपयोग की वस्तुओं की कलात्मक उत्कृष्टता इस कथन का आधार है।

त्वरित सुझाव: लघुता का अर्थ छोटे आकार से जोड़िए और महत्ता का अर्थ उनके शिल्प तथा सौंदर्यबोध से; उदाहरण अवश्य दीजिए।